TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | शुक्रवार | 14 जुलाई 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :20 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

मिशन रोजगार को पूरा करने में जुटी योगी सरकार, 510 चयनित अभ्यर्थियों को बांटे नियुक्ति पत्र

लोक पहल

लखनऊ। यूपीपीएससी एवं यूपीएसएसएससी द्वारा विभिन्न पदों पर चयनित 510 अभ्यर्थियों को मुख्यमंत्री योगी ने नियुक्ति पत्र वितरित किये। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी ने सफल अभ्यर्थियों और उनके अभिभावकों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि यह मेरे लिए महत्वपूर्ण क्षण है कि सचिवालय प्रशासन के समीक्षा अधिकारी व सहायक समीक्षा अधिकारियों को नियुक्ति पत्र मिल रहा है। उन्होंने कहा कि जिन अभ्यर्थियों का चयन हुआ वो अलग अलग पृष्ठभूमि और अलग अलग क्षेत्र से है। कोई सोच सकता था कि बिजनौर और अम्बेडकर नगर से कोई नियुक्त होगा, लेकिन आज बदलाव दिख रहा है।

उन्होंने कहा कि जब संवेदनशील सरकार है तो जनता के साथ भेदभाव कैसे होगा। क्योंकि इससे बड़ा पाप कुछ नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने निष्पक्ष व पारदर्शी भर्ती की प्रक्रिया बनाई जिससे किसी के साथ भेद भाव न हो।

योगी ने कहा कि कुछ कर गुजरने की तमन्ना होनी चाहिए तो सब कुछ संभव हो जाता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हमेशा कहते है चुनौतियों से घबराना कैसा। उसका सामना करने के लिए सामर्थ्य पैदा करना होगा। उन्होंने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि पिछले छ वर्ष मे छ लाख नियुक्ति हम दे चुके है। 2021 से अबतक डेढ़ वर्ष मे 16 नियुक्ति पत्र कार्यक्रम कर चुके है इसमे 55 हजार सरकारी नौकरी हमने दी है। निर्वाचन विभाग को आज 128 कनिष्ठ सहायक प्राप्त हुए है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अभी हाल में नगर निकाय चुनाव हुए, छ करोड़ मतदाता थे,17 नगर निगम थे..इन सब मे शांतिपूर्ण बिना हिंसा,बिना बूथ कैपचरिंग के चुनाव सम्पन्न हुए। लेकिन आपने बंगाल पंचायत चुनाव देखे मतदान के दिन हिंसा हुई, मतगणना के दिन भी हिंसा हुई, ये लोग लोकतंत्र की बात करते है।

उन्होंने कहा कि जो लोग निर्वाचन आयोग मे चयनित हुए वो लोकतान्त्रिक व्यवस्था को संचालित करने में सहायक होंगे जो लोग सचिवालय प्रशासन मे उनको समझना होगा, जो व्यवहार हमे अपने साथ बुरा लगता है,वो दूसरे के साथ नही होना चाहिए। आप से शासन और मै खुद इस बात की अपेक्षा रखता हूं कि जिस शुचिता पूर्ण प्रक्रिया से आपकी नियुक्ति हुई, उसी ईमानदारी और शुचिता से शासन की मंशा अनुरूप कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि आज नियुक्ति पर कोई उंगली नहीं उठा सकता,आरक्षण का नियम संगत लाभ हर तबके को मिल रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी को मिला फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'लीजन ऑफऑनर'

सम्मान पाने वाले भारत के पहले प्रधानमंत्री बने मोदी

नई दिल्ली एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को फ्रांस में सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'लीजन ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस सम्मान को पाने वाले पहले प्रधानमंत्री बन गए हैं। यह सम्मान दुनियाभर की कुछ चुनिंदा हस्तियों को ही दिया गया है। इससे पहले यह सम्मान जिन लोगों को दिया गया है उनमें संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बुट्रोस –घाली, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला, वेल्स के तत्कालीन राजकुमार किंग चार्ल्स और जर्मनी की पूर्व चांसलर एंजेला मर्केल आदि शामिल हैं। इससे पहले फ्रांस पहुंचने पर पीएम मोदी का जोरदार स्वागत किया गया।

फ्रांस पहुंचने पर वहां की पीएम एलिजाबेथ बोर्न ने प्रधानमंत्री मोदी की अगवानी की। यहां पीएम मोदी को 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया गया और दोनों देशों का राष्ट्रगान बजाया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फ्रांस पहुंचने पर उनके सम्मान में एलिसी पैलेस में निजी रात्रिभोज का आयोजन किया गया।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने अपने आधिकारिक आवास एलिसी पैलेस में पीएम मोदी की मेजबानी की। इससे पहले पीएम मोदी ने भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की धरती भी एक बड़े परिवर्तन का गवाह बन रही है। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व भारत के प्रति नई उम्मीद और नई आशा से भरा हुआ है। यह उम्मीद ठोस नतीजों में बदल रही है। भारत अब समस्याओं का स्थायी समाधान कर रहा है।

उप्र में भाजपा के एक चौथाई सांसदों पर लटकी तलवार, कट सकता है टिकट

- प्रदेश के कई मंत्रियों के नाम भी शामिल, हारी हुई सीटों पर भी परिवर्तन संभव

लोक पहल

लखनऊ। लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर विपक्ष की तरफ से एकजुटता की बातें की जा रही हैं। विपक्षी दल अपनी आगे की रणनीति के लिए बेंगलुरु में जुटने वाले हैं। लोकसभा चुनाव की दृष्टि से देश के सबसे महत्वपूर्ण राज्य उप्र में विपक्ष की रणनीति क्या होगी, इसको लेकर भी सभी की नजरें बेंगलुरु में होने वाली विपक्ष की बैठक पर रहेंगी। अब खबर है कि विपक्ष की रणनीति और सत्ता विरोधी लहर को देखते हुए भाजपा उप्र में एक–चौथाई से ज्यादा सांसदों के टिकट काट सकती है।

सूत्रों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, इन सासंदों में कुछ केंद्रीय मंत्री भी शामिल हैं। भाजपा के इन सासंदों में से ज्यादातर यूपी वेस्ट और उप्र ईस्ट से संबंध रखते हैं। कहा जा रहा है कि ऐसा ही भाजपा अन्य राज्यों में भी प्लान कर रही है। सूत्रों ने बताया कि जिन नेताओं ने 75 साल की उम्र सीमा पार कर ली है या जो सांसद जनता और पार्टी कार्यकर्ताओं से दूर हैं और अपने क्षेत्रों में प्रभावशाली नहीं रहे हैं, उन्हें इस बार निराशा झेलनी पड़ सकती है।

इसके अलावा ऐसे नेताओं के टिकट भी काटे जा सकते हैं, जिन्होंने 2019 में भले ही बड़े चेहरों को मात दी थी लेकिन वह विवादों की वजह से खबरों में बने रहे।

कई सांसद जो वर्तमान में मंत्री हैं, उनका टिकट काटा जा सकता है। सूत्रों ने बताया कि विपक्षी दलों के उम्मीदवारों के साथ–साथ सोशल फैक्टर्स को देखते हुए भाजपा अपने उम्मीदवारों का चयन करेगी। सांसदों के प्रदर्शन का आंकलन करने के लिए भाजपा अपने बूथ लेवल कार्यकर्ताओं से मिले फीडबैक को ध्यान में रख रही है। पार्टी सूत्रों के अनुसार "हर सासंद की बहुत नजदीकी से मॉनिटरिंग की जा रही है। यह भी देखा जा रहा है कि उन्होंने अपनी सांसद निधि में से कितना फंड इस्तेमाल किया है और किस लिए इस्तेमाल किया है।

लोकसभा चुनाव 2019 में उप्र में भाजपा 80 में से 62 सीटों पर जीतने में सफल रही थी। भाजपा की सहयोगी अपना दल (एस) को 2 सीटें मिली थीं। राज्य में भाजपा के खिलाफ एकजुट होकर लड़े सपा–बसपा को कुल मिलाकर 15 सीटें मिली थीं। कांग्रेस पार्टी सिर्फ रायबरेली की सीट जीत पायी थी। भाजपा ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए सभी 80 सीटों पर जीत का लक्ष्य रखा है। मैनपुरी और रायबरेली सीट पर भाजपा ने कभी चुनाव नहीं जीता है। आगामी लोकसभा चुनाव में इन दोनों सीटों पर भी कमल खिलाने का लक्ष्य रखा है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक देश में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार बनाने के लिए यूपी में 2019 से बड़ी जीत आवश्यक है। लिहाजा पार्टी के लिए एक–एक सीट पर चुनाव महत्वपूर्ण है।

पानी पानी दिल्ली: सीवर लॉक, पीने का पानी बंद, श्मशान घाटों पर ताला

लोक पहल

नई दिल्ली। दिल्ली में यमुना नदी में बाढ़ आने से हालात खराब हैं. सड़कों से लेकर गलियों तक में पानी भरा है लोग घरों में कैद हैं। कई इलाकों में जन–जीवन पूरी तरह पटरी से उतर गया है। यमुना अभी भी खतरे के निशान से काफी ज्यादा ऊपर बह रही है। लोगों के सामने पीने के पानी का संकट है। बाढ़ के कारण तीन वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट बंद हो गए हैं। जगह–जगह सीवर लॉक हैं। श्मशान घाट से लेकर शेल्टर होम तक पर ताला लग गया है। जरूरी सामानों की सप्लाई भी ठप है। यमुना के पानी में डूबे इलाकों में लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। दिल्ली में तीन सबसे बड़े वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट वजीराबाद, चंद्रावल और ओखला जल सोधन संयंत्र को बंद करना पड़ा ह। यमुना का पानी पंप और मशीनों में घुस गया है। अब तक 20,000 से ज्यादा लोगों को राहत शिविरों में भेजा गया है। मुखर्जी नगर के डीडीए फ्लैट्स में घुटने तक सीवेज का पानी घरों में घुस गया है। बार–बार गुहार लगाने के बावजूद कोई भी मदद नहीं मिल पा रही है। यमुना नदी का जलस्तर रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने से सड़कें दरिया में बदल गईं हैं। घरों, अस्पतालों, श्मशान घाटों और शेल्टर होम में पानी घुस गया है। दिल्ली में स्थिति गंभीर होने के बावजूद जीवन को संकट में भी डाला जा रहा ह। कुछ लोगों ने रिलीफ कैंप में जाने के बजाय अपनी बिल्डिंग की ऊपरी मंजिलों पर रहना पसंद किया है। कई लोगों को पानी से अपनी जरूरी चीजें बचाने की कोशिश करते देखा जा रहा है। पूर्वी और उत्तर पूर्वी दिल्ली सबसे ज्यादा बाढ़ प्रभावित है. बाढ़ प्रभावित इलाको में रहने वाले लोगों को रिलीफ कैंपों में रखा गया है। दिल्ली में बाढ़ को देखकर लगता है कि आने वाले दो–तीन दिनों तक दिल्लीवासियों को राहत नहीं मिलने वाली है।

आखिर क्यों लाल हुआ टमाटर

बिचौलियो और फसल के खराब होने की वजह से बढ़े दाम

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। टमाटर ऐसा लाल हुआ कि अब किलो से नहीं बल्कि पीस में बिकने लगा है। कई सब्जी मंडियों में 15 रूपये का एक टमाटर बिकने के समाचार मिले है। दुकानदारों का तर्क है कि अब किलो–आधा किलो टमाटर कोई लेता नहीं है। 150/– रूपये किलो भाव चल रहा है एक किलो में करीब 10 टमाटर चढ़ते है इसलिए 15/–रूपये का एक टमाटर सब्जी वाले खुलेआम बेच रहे है। सुनने में यह मजाक से लग रहा है लेकिन यही सच है। आम जनता के किचन से लेकर सत्ता के गलियारों तक केवल टमाटर की ही चर्चा है। कई जगह तो टमाटर के भाव 250/–रूपये किलो तक पहुंच गये है। आम घरों से लेकर छोटे मोटे ढाबे, होटल और रेस्टोरेंट से टमाटर गायब हो गया। टमाटर पर इतनी चर्चा होने के बाद यदि आपको यह पता चलें कि देश में टमाटर का उत्पादन मांग से कहीं अधिक है तो आप यह सुनकर अचंभित रह जाएंगे लेकिन आम जनता को टमाटर भारी उत्पादन के बावजूद लाभ नहीं मिल पा रहा है। सरकार ने टमाटर, प्याज और आलू को शीर्ष प्राथमिकता बताया था, लेकिन सरकार की दोषपूर्ण नीतियों के चलते टमाटर पहले सड़कों पर फेंके गए, फिर 250 रुपये में बेचे जाने लगे। बताया जाता है कि भारत में प्रतिवर्ष करीब 22 सौ करोड़ रूपये की प्यूरी भी एक्सपोर्ट की जाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि प्यूरी सभी टमाटरों से नहीं बनती है। इसके लिए कुछ विशेष वैरायटी के टमाटर भी प्रयोग में लाए जाते है वहीं भारत में टोमैटो कैचअप का व्यापार भी बहुत तेजी से फैल रहा है जिसमें भी भारी मात्रा में टमाटर का प्रयोग किया जाता है और बाजार में टमाटर कम पहुंच पाता है।

टमाटर की महंगाई की चिंता देश की हर ग्रहणी को सताने लगी है। जिनकी रसोई का बजट इस लाल सब्जी ने बिगाड़ दिया है। टमाटर के साथ अदरक, मिर्च और दूसरी हरी सब्जियों के रेट इतने अधिक बढ़ गए हैं कि लोग सोचने को मजबूर हो गए है कि आखिर वह क्या

18 मिलियन टन मांग

खाएं! किसानों के सामने जिस टमाटर को फेंकने की नौबत थी, जिसके लिए उन्हें चार–पांच रुपये भी नहीं मिल पा रहे थे, जून महीने के आखिर में इसकी लाली हर किसी के लिए मुसीबत बन गई। जिस सब्जी से आम आदमी का पेट भरता था, वह उसकी थाली से लापता

22 मिलियन टन है टमाटर का उत्पादन

किसी भी देश से पीछे नहीं है। इसके बावजूद सब्जी मंडियों में टमाटर की कीमत सबसे ज्यादा है।

अभी उम्मीद मत पालिए कि टमाटर का दाम कम होने जा रहा है। सरकार चाहे जितनी कोशिश कर ले,

कृषि वैज्ञानिक डा. सुरेश मिश्रा का कहना है कि बाजार में इन दिनों टमाटर के दामों में आई भारी तेजी का कारण बारिश भी है। बारिश के कारण खेतों में पानी भरने से फसल खेत में ही सड़ जाती है वहीं भारी मात्रा टमाटर दूसरें देशों को एक्सपोर्ट किया जाता है जिससे भारतीय बाजारों में टमाटर की आवक कम हो जाती है। इतना ही नहीं आपको यह जानकर हैरानी होगी कि पूरे देश में टमाटर का व्यापार करने वाले केवल तीन दर्जन व्यापारी ही हैं जिनके हाथ में टमाटर का पूरा व्यापार है। यह व्यापारी खेत से टमाटर खरीदकर उसे स्टोर करते हैं और फिर मांग के अनुसार आपूर्ति करते है। कई व्यापारियों के पास तो अपने खुद के फार्म भी है जिनमें वह टमाटर की फसल पैदा बेचने का काम करते है।

है। टमाटर की कीमत सेब से भी ऊपर क्यों है, इसका किसी के पास मुकम्मल जवाब नहीं है?

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र के करमा व मद्धूपुर और मिर्जापुर के राजगढ़ इलाके का टमाटर गल्फ कंट्री के अलावा पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका और बांगलादेश तक निर्यात किया जा रहा है। संभल और अंबेडकरनगर में भी टमाटर की बंपर पैदावार होती है।

उपज के मामले में भारतीय किसान

कीमत घटने वाली नहीं है। भारी बारिश के कारण उत्तरी राज्यों से सप्लाई में और कमी आएगी। पिछले साल हुए नुकसान के कारण किसानों ने इस बार टमाटर की खेती से परहेज किया था। इस साल बेंगलुरु में भी कम फसल हुई है, जिससे उत्पादन गिरा है। बेमौसम बारिश से टमाटर की फसलों में कीड़े लग गए। अगस्त के बाद ही टमाटर की कीमतों में कमी आने की उम्मीद की जा

मांग से अधिक है उत्पादन

अब सवाल यह उठता है कि जब मांग से कहीं अधिक उत्पादन होने के बाद भी आखिर टमाटर इतना लाल क्यों है। इसकी तह में जाने पर पता चलता है कि देश में टमाटर की कुल मांग 18 मिलियन टन प्रतिवर्ष है। जबकि इस वर्ष 22 मिनियन टन टमाटर खेतों में पैदा हुआ है। अब सवाल यह उठता है कि आखिर मांग से अधिक उत्पादन होने के बाद भी टमाटर के दाम आसमान क्यों छू रहे हैं और यह लोगों की पहुंच से बाहर क्यों हो रहा है। बताया जाता है कि इसका मुख्य कारण टमाटर की सप्लाई पूरी तरह से बिचौलियों के हाथों पहुंच गई है खेत से आम घरों तक पहुंचने के बीच इन बिचौलियों ने दाम बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। वहीं कृषि विज्ञान से जुड़े वैज्ञानिको का मानना है कि इस बार टमाटर में कुछ बीमारी लगने के कारण भी टमाटर जल्दी खराब हो रहा है और दामों में तेजी आई है।

टमाटर का एक्सपोर्ट

हमारे देश में बात चाहें खाद्य तेल की हो या पेट्रोलियम पदार्थो की जब भी इनके दामों में तेजी से बढ़ोत्तरी होती है तो इसके पीछे सरकार 'इंपोर्ट' करने का रोना रोकर अपना पीछा छुड़ा लेती है अब लोगों के मन में यह सवाल उठने लगा है कि क्या हमारा देश टमाटर भी विदेशों से 'इंपोर्ट' करता है! तो आपकी जानकारी के लिए बता दें कि भारत चीन के बाद टमाटर के उत्पादन करने वाला सबसे बड़ा देश है। भारत में प्रतिवर्ष करीब 2 करोड़ टन से अधिक टमाटर का उत्पादन किया जा रहा है और गत वर्ष करीब 90 हजार मीट्रिक टन टमाटर भारत में अन्य देशों को एक्सपोर्ट भी किया था।

टमाटर पैदा करने वाले राज्य

भारत में टमाटर की खेती सबसे अधिक मध्य प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के साथ–साथ उत्तर प्रदेश व बिहार में भी की जाती है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार टमाटर की एक फसल अगस्त से सितम्बर के बीच बोई जाती है तथा दूसरी फसल फरवरी से जुलाई के मध्य। यानि वर्तमान समय में फरवरी वाली फसल का टमाटर तैयार हो चुका है और उसे बिकने के लिए बाजार में होना चाहिए था लेकिन इसके बावजूद भी आखिर टमाटर के दाम किन कारणों से आसमान को छू रहे है।

मौसम की मार और कालाबाजारी

सब्जी के थोक व्यापारियों का कहना है कि टमाटर के महंगा होने का प्रमुख कारण यह है कि उप्र, मध्य प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान में इस बार टमाटर की फसल बड़ी मात्रा में खराब हो गई है। हिमाचल में भी टमाटर की फसल को नुकसान पहुंचा है इसलिए दामों में भारी उछाल आया है। बताया जाता है कि इस समय कर्नाटक का टमाटर बाजार में आ रहा है जो ढुलाई व अन्य कारणें से काफी महंगा पड़ रहा है वहीं टमाटर व्यापार से जुड़े कुछ माफिया यूनियन बनाकर टमाटर की सप्लाई मनमाने दामों में कर रहे है।

सकती है। वह भी तब, जब सोलापुर, पुणे, नासिक और सोलन से टमाटर की सप्लाई शुरू होगी।

भाजपा सरकार ने जब से कारपोरेट घराने के लिए मंडी कानून बदला है और अनाज व सब्जियों को कहीं भी खरीदने–बेचने का नियम बनाया है तब से किसानों की बदहाली का नया दौर शुरू हो गया है। यूपी में लागू नए मंडी कानून की मार खासतौर पर सब्जियों की खेती करने वाले किसानों पर पड़ रही है और मुनाफा कमा रहे हैं आढ़ती व बिचौलिए।

...लो मैं तेरे वास्ते सब छोड़कर आ गई!

ये प्रेम दीवानी या कोई घाघ पुरानी ?

बलराम शर्मा

देश में आजकल 'दो स्टोरीज' की बहुत चर्चा है..प्रिंट से लेकर इलेट्रॉनिक मीडिया तक इनके हल्ले हैं। सोशल मीडिया तो भरी पड़ी है...जी हां, हम बात कर रहे हैं एक 'ज्योति मौर्य संग मनीष दुबे' दूसरी 'सीमा हैदर संग सचिन'...लांछन की बारिश हो रही है। 'पति–बच्चे' होते हुए भी प्रेम करने की जुर्रत करना ही सबसे बड़ी 'हिमाकत' समझा जा रहा है...पुरुष प्रधान समाज में इससे ज्यादा और समझा भी क्या जा सकता है ?? खैर, हम ज्योति से इतर, पाक पोषित सीमा हैदर की बात करते हैं। दो मुल्कों के बीच दशकों से पनप चुकी नफरत की दीवार के बीच अनायास ही आ टपकी इस लव स्टोरी को मीडिया वालों ने 'हॉट स्टोरी' बना दिया है। सब अपने–अपने श्चश्मेश से देखकर अपनी कहानी बयां कर रहे हैं। करें भी क्यों न...मसाला का मुरब्बा जो है। पाकिस्तान से एक शादीशुदा महिला बेधड़क मय बच्चों के यहां आ जाए...वो भी बगैर बीजा ??? कान खटकना लाजिमी है...वो भी सचिन सरीखे आदमी के लिए...भई ऐसी मुहब्बत तो फिल्मों में ही देखने को मिलती थी, यहां हकीकत है। गाना है...'सात समंदर पार मैं तेरे पीछे–पीछे आ गई...'

वाकई वो वाया दुबई, काठमांडू होकर अपने फरहाद के पास आ ही गई। अब लोग सवाल उठा रहे हैं कि पांच जमात तक पढ़ी महिला इंग्लिश, अच्छी हिंदी कैसे बोल लेती है ? हमारे यहां की बहुत पढ़ी महिलाएं भी अकेले इतना लंबा फेरा नहीं लगा सकतीं ? अब कोई सीमा हैदर को जासूस बता रहा है, कोई आईएसआई का एजेंट... कोई पाक सेना की खुफिया साजिश करार दे रहा है। कई चौनल तो दिन–रात बहस में जुट गए हैं...कई तो दुबई से लेकर पाक में कुंडली भी खंगाल चुके हैं... मजेदार बात ये है कि भारत की तमाम खुफिया एजेंसी.. न ही गृह विभाग.. कुछ बोल रहा ?? अलबत्ता यहां बगैर बीजा पकड़े जाने के बाद कोर्ट से उसको जमानत भी मिल गई। उसने शौहर को तलाक दिए बगैर सचिन से दूसरी शादी भी नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में कर ली। सीमा की

मानें तो ये खिचड़ी तीन साल से पक रही थी।

लिखने वाले भी क्या गजब का लिखते हैं..एक ने लिखा 'सचिन तो शक्ल से रोहिंग्या लगता है' यानि शक्ल देखकर एक 'कृशकाय' युवक की 'आइडेंटिटी' ही बदल दी गई। यही नहीं, एक पूर्व डीजीपी ने तो सीमा को जासूस साबित करने में वकील से ज्यादा तर्क दे डाले। कहा, उसने अपने सिम से बात क्यों नहीं की ?? नेपाल में सहेलियां बनाकर उनके फोन का इस्तेमाल क्यों किया ?? अरे, साब...जब वो पबजी खेल रही थी..तो नम्बर उसी का था...मोहब्बत में जब सानिया मिर्जा पाकिस्तान की बहू बन गईं.. .तब क्या जासूसी का कोई तमगा लगा ?? वो इसलिए कि हाई प्रोफाइल मामला था। न यहां न वहां..कोई चूं चपड़ हुई। अब तो माशाअल्लाह दोनों के बच्चे भी हैं। कहावत भी है...**जब मियां–बीबी राजी, तो क्या करेगा काजी।**

दरअसल, बात का बतंगड़ बनाने का हमारे यहां चलन सा है। वो तो भाग के आई है.. भाग के आना–जाना वैसे भी ठीक न माना जाता। अब वो तीन साल तक प्यार की रसभरी बातें करने का बाद 'सीमा' पार कर आई। अपने मुल्क से प्यार करने का हक सभी को है, लेकिन दूसरे देश को आदर देने का हौसला भी होना चाहिए... वो सीमा ने अभी तक दिखलाया है। उसे अपने मुल्क से लगाव है, लेकिन मोहब्बत के लिए 'वतन' ही नहीं अपना 'मजहब' छोड़कर वह सचिन की बाहों में है...तो बाहों को फैलाकर उसका इस्तकबाल भी करना चाहिए। ये समझना चाहिए कि कोई आसानी से अपना घरवार नहीं छोड़ता.. उसने सरहद पारकर वतन भी छोड़ा है...जब दुनिया भर में वो फैल गई है तो उसकी निगरानी भी 'फैल' चुकी होगी। सरहद पार कट्टरपंथी मौके की तलाश में होंगे ! यहां–वहां का खुफिया तंत्र भी सक्रिय हो चुका होगा...नेपाल से इस तरह की आवाजाही पर निगाहें टिक चुकी होंगी..और एक बात मिस्टर 'डोभाल' को हल्के में मत लो पाक में रहकर हर कारगुजारी से वाबस्ता हैं। बस, इसको एक असाधारण प्रेम कहानी समझकर ये भी समझने की कोशिश करो..

ये इश्क नहीं आसां, बस इतना समझ लीजै। एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।।

रिपोर्ट लेखन पर तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। एसएस कॉलेज के वाणिज्य विभाग में परियोजना रिपोर्ट लेखन पर चल रही तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन हो गया। कार्यशाला के अन्तिम दिन 72 प्रतिभागियों ने अलग–अलग विषयों पर परियोजना रिपोर्ट तैयार करके प्रस्तुत की। परियोजना की गुणवत्ता के आधार पर 15 प्रभिभागियों को ए ग्रेड, 44 प्रतिभागियों को बी ग्रेड तथा 13 प्रतिभागियों को सी ग्रेड प्राप्त हुआ। ए ग्रेड प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों में अदिति खन्ना, अक्षिता मिश्रा, सुयषी सक्सेना, तरूषी वाथम, वैष्णवी मिश्रा, आदित्य गोस्वामी, वेदान्त सिंह, अमान सिद्दीकी, कशिश सिक्का, दिलीप कुमार, पलक राठौर, कशिश खण्डेलवाल, सुमित कुमार, नितांशी गुप्ता, वैभव सिंह सम्मिलति थे। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो आरके आजाद तथा वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो अनुराग अग्रवाल ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किया। डॉ० रूपक श्रीवास्तव के संचालन में हुए कार्यक्रम में डॉ० देवेन्द्र सिंह, डॉ कमलेश गौतम, डॉ० गौरव सक्सेना, डॉ० अजय वर्मा, डॉ० सन्तोष प्रताप सिंह, डॉ० सचिन खन्ना आदि शिक्षक भी मौजूद रहे।

जनसंख्या स्थिरता पखवाड़े का शुभारंभ, सीएमओ ने रवाना किया 'सारथी' वाहन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने जन जागरूकता रैली एवं सारथी वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

सीएमओ डॉ. आरके गौतम ने बताया कि सारथी वाहन शहर में परिवार नियोजन का प्रचार प्रसार करेगा एवं जनसंख्या स्थिरता पखवाड़े के दौरान जनपद के समस्त ब्लॉक स्तरीय चिकित्सालय में परिवार नियोजन की समस्त सेवाएं प्रदान की जाएंगी। उन्होंने बताया कि इसके माध्यम से परिवार नियोजन के स्थायी साधन (महिला और पुरुष नसबंदी) और अस्थायी साधन (अंतरा, छाया, पीपीआईयूसीडी, आईयूसीडी, कंडोम) के बारे में समुदाय को जागरूक किया जाएगा।

समस्त हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर आशीर्वाद अभियान के तहत सीएचओद्वारा नवविवाहित दंपतिको परिवार नियोजन के बारे में समस्त जानकारी प्रदान की गई एवं नवविवाहित दंपति को शगुन किट भी वितरितकी गई। इस अवसर पर डॉ. गोविंद स्वर्णकार, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, आरसीएच,डॉ मनोज मिश्रा, नोडल अर्बन एरिया, वीरेंद्र शर्मा जिला शिक्षा एवं सूचना अधिकारी, इमरान खान डीपीएम,पुष्पराज गौतम डीसीपीएम, अनिल कुमार डीएफपीएलएम, नवीन कुमार, पुनीश, भुवनेश दीक्षित सहित अन्य अधिकारियों ने प्रतिभाग किया।

स्वामी शुकदेवानंद के निर्वाण दिवस पर गुरुपूजन व भंडारे का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानंद सरस्वती के निर्वाण दिवस पर मुमुक्षु शिक्षा संकुल में गुरुपूजन किया गया। संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने आश्रम परिसर में गुरुपूजन के उपरांत गीता पाठ किया। प्राचार्य डॉ आर के आजाद एवं उपप्राचार्य डॉ अनुराग अग्रवाल ने स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में सचिव डा ए के मिश्रा एवं प्राचार्य डॉ जयशंकर ओझा ने स्वामी जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन, पुष्पार्चन एवं माल्यार्पण करके उन्हें स्मरण व नमन किया। इस अवसर पर आश्रम परिसर में स्थित सत्संग भवन में हनुमान चालीसा तथा सुंदरकांड का पाठ भी किया गया। पूजन में श्रीप्रकाश डबराल, डॉ प्रभात शुक्ला, डॉ आलोक कुमार सिंह, चंद्रभान त्रिपाठी, मनोज अग्रवाल, कमलेश त्रिवेदी, डा अमीर सिंह यादव, झरना रस्तोगी, रचना रस्तोगी, बेबी शर्मा, डा मेघना मेहदीरत्ता, ममता सिंह, शिल्पी, किरण मेहरोत्रा, शोभित अग्रवाल, शिवम शर्मा, ओमकार मनीषी, सुयश सिन्हा राम निवास गुप्ता उपस्थित रहे। पूजन संपन्न कराने में पं आदेश पांडे, पं सत्येंद्र पाठक, धीरज मिश्रा, पं करुणा शंकर तिवारी, पं अंकुर शुक्ला, विशाल मिश्रा आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में आश्रम परिसर में एक विशाल भंडारे का आयोजन भी किया गया।

कन्या सुमंगला योजना की दी जानकारी, बताई उपयोगिता

लोक पहल

शाहजहांपुर। ब्लॉक भावलखेड़ा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व रामदत्त इंटर कॉलेज में प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित ने छात्राओं को मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना का आवेदन कराने के लिए जागरूक किया। उन्होंने छात्राओं को बताया कि परिवार में जिनके दो बच्चे होंगे, जिसमें एक बेटा या एक बेटी व दोनों बेटियां हो तो उस परिवार की बेटियों को कन्या सुमंगला योजना की छह श्रेणियां के अनुसार योजना का लाभ आवेदन करने के बाद दिया जाएगा। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना की अहर्ताओं व पात्रता के बारे में भी जानकारी दी गई। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभागीय योजनाओं के विषय में कार्यशाला में जुड़ी एएनएम व आशाओं को समस्त योजनाओं के विषय में जानकारी दी। रामदत्त इंटर कालेज में भी छात्राओं को मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के बारे में विस्तार से बताया गया। इस दौरान समस्त शिक्षक शिक्षिकाएं मौजूद रहीं।

पंजाबी महासभा ने किया महापौर अर्चना वर्मा को सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर । पंजाबी महासभा की ओर से रामनगर कालोनी के श्रीकृष्ण मंदिर में जनपद की पहली मेयर अर्चना वर्मा का सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रामनगर कालोनी की पार्षद शिखा कृष्ण गोपाल बिन्नू ने कहा कि यह गौरव का विषय है कि शाहजहांपुर नगर में मेयर के पहली बार हुए चुनाव में एक महिला महानगर की मेयर बनी है। हम सब उनके नेतृत्व में शाहजहांपुर शहर को एक विशिष्ट पहचान दिलाने में सफल हो इसके लिए हम सभी नगर वासियों को स्वच्छता और स्वास्थ्य जागरूकता की दिशा में काम करना होगा। पंजाबी महासभा के अध्यक्ष किशन लाल छाबड़ा ने शहर की ट्रैफिक व्यवस्था की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया। समाजसेवी विजय तुली ने कहा कि हम शहर को और बेहतर बना सकते हैं। शहर में फलों को समर्पित सड़के जैसे आम रोड, मैंगो रोड इत्यादि को विकसित कर हम लोग न केवल शहर को हरा भरा बना सकते है अपितु शाहजहांपुर का नाम देश के कोने कोने में फैला सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन हरीश बजाज तथा दिनेश गोगिया द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस दौरान पार्षद पति कृष्ण गोपाल बिन्नु ने स्मृति चिन्ह देकर मेयर अर्चना वर्मा, उनके पति राजेश वर्मा तथा निगम के उप सभापति वेद प्रकाश मौर्य को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर डा विकास खुराना, अशोक सचदेवा, जुगल किशोर तनेजा, बंटी ग्रोवर, बिट्टू पावा, सोनी कपूर, रूपेश तनेजा, नरेश अरोड़ा, विशाल अरोड़ा, राजू कुमरा, पवन ग्रोवर, टीटू बत्रा, प्रेम प्रकाश नारंग, रूपेश वोहरा, सुरेंद सेठी, विनय चड्ढा, बब्बल चोपड़ा, बब्बल चावला इत्यादि उपस्थित थे। श्रीकृष्ण मंदिर कमेटी के प्रधान लाजपत बत्रा ने सभी का आभार जताया।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने किया समान नागरिक संहिता का समर्थन

लोक पहल

शाहजहांपुर। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने सामान नागरिक संहिता का समर्थन करते हुए प्रस्ताव पारित किया है।

मंच की एक गोष्ठी में प्रदेश संयोजक मुस्लिम राष्ट्रीय मंच गौसेवा, पर्यावरण एवं सेवा प्रकोष्ठ तथा उर्दू अकादमी के सदस्य हाजी जहीर अहमद ने कहा कि एक राष्ट्र, एक नागरिक और एक कानून से किसी को कोई समस्या नहीं होगी। हमें चाहिए कि यूसीसी का हर स्तर पर समर्थन करें। राष्ट्रीय सह संयोजक उर्दू अकादमी सदस्य इस्लाम सुल्तानी मदारी ने कहा कि मुस्लिम राष्ट्रीय मंच समान नागरिक संहिता लागू करने के लिए लॉ कमीशन के गठन का स्वागत करता है। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के ब्रज प्रांत सह संयोजक सरताज मंसूरी ने कहा कि मंच हमेशा मानता आया है कि राष्ट्र सर्वोपरि है, भारत के लोग धर्म के नाम पर विभाजित ना हो और ना ही एक दूसरे से लड़ें। सभी लोग एक देश एक नागरिकता और एक झंडे के साथ चलें, इसी में सबल–सजग सशक्त राष्ट्र का हित है। उन्होंने कहा कि सभी अपने अपने धर्म के प्रति आस्था रखें और दूसरे धर्मों का भी सम्मान करें।

गोष्ठी में शेर अली, सैयद शमीम अहमद, चांद आलम, शाबान हुसैन, अख्तर अली, बहार अहमद, मोहम्मद अफरोज, माहताब खान, मोहम्मद सलीम, छोटे खां, ताज मोहम्मद, मोहम्मद अकील, सूफी शाकिर हुसैन, नबी अहमद, नसरुद्दीन, मोहम्मद तैयब, रियाजुद्दीन, अरबाज अहमद, मोहम्मद यूनुस, शहजाद, वसीम खां, यासीन खां आदि मौजूद रहे।

एबीवीपी ने किया निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद महानगर की कैंट नगर इकाई द्वारा आर्य महिला इंटर कॉलेज में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन की गया। विभाग संगठन मंत्री मनोज यादव ने बताया कि विद्यार्थी परिषद विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन जिसकी स्थापना 9 जुलाई 1949 को हुई थी और तब से 75 वर्ष पूर्ण हो गए है तब से लेकर आज विद्यार्थी परिषद छात्र हित व राष्ट्र हित मे कार्य करती आयी है विद्यार्थी परिषद को तक विद्यार्थी परिषद छात्र छात्राओं के बीच कार्य करती आ रही है। कैंट नगर सह मंत्री पूजा ने कहा कि विद्यार्थी परिषद ने विभिन्न आयामों के तहत कार्यक्रमों का आयोजन करती है और छात्र छात्राओं के बीच में पहुंचकर उनको कार्यक्रम में सम्मिलित कर संगठन से जोड़ती है। कार्यक्रम में मोहिनी प्रजापति, रिमजिम सक्सेना, मुस्कान, प्रिया, यशी कीर्ति आदि छात्राएं सम्मिलित रही।

सम्पादकीय

विवेक शून्य होता समाज बढ़ती हिंसा

पिछले कुछ समय से समाज में घट रही घटनाओं को देखकर ऐसा महसूस होता है कि समाज विवेकशून्य होता जा रहा है। आम व्यवहार में जिस तरह की प्रवृत्तियां घुलती जा रही हैं, उसमें ऐसा लगने लगा है कि लोगों के भीतर इस तरह के मूल्यों की जगह बहुत कम हो रही है। बेहद मामूली बातों पर भी जिस तरह न केवल आक्रामक और हिंसक हो जाने, बल्कि पीट–पीट कर हत्या तक कर देने जैसे मामले सामने आ रहे हैं, वे इस बात का संकेत हैं कि लोगों के लिए विवेक का इस्तेमाल करना अब कोई जरूरी बात नहीं रह गई है। कुछ दिन पहले उप्र के शाहजहांपुर जनपद में केवल मोटरसाइकिल के पहिये के छू जाने से विवाद इतना बढ़ गया कि पिता–पुत्र की हत्या कर दी गई। अब न्यायालय ने हत्यारोपी पिता–पुत्र और उनके दो साथियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसी तरह दिल्ली के वजीराबाद इलाके में राह चलते दो लोग आपस में टकरा गए। सभ्य होने का तकाजा यह था कि ऐसी स्थिति में दोनों को एक दूसरे से सौहार्द के लहजे में माफी मांग कर आगे बढ़ जाना चाहिए था। लेकिन इसके उलट एक व्यक्ति इस हद तक आक्रामक हो गया कि उसने दूसरे की पीट–पीट कर हत्या कर दी। दिल्ली के ही द्वारका इलाके में हुई दूसरी घटना में भी अभद्र भाषा को लेकर एक व्यक्ति के साथ कुछ लोगों की बहस हो गई और वहां भी आरोपियों ने उसे पीट–पीट कर मार डाला।

इस तरह की घटनाएं आए दिन देश भर में सामने आने वाले वाकयों की एक कड़ी भर हैं। सड़क पर वाहन चलाते हुए या गली–मोहल्ले में चलते या आस–पड़ोस में किसी बहुत साधारण बात पर दो पक्षों के बीच विवाद शुरू होता है और वह किसी समाधान पर पहुंचने के बजाय एक त्रासदी में खत्म होता है।

सवाल है कि क्या लोगों के पास विवेक का इस कदर अभाव हो गया है कि वे बहुत छोटी बातों का भी हल निकाल पाने में नाकाम हो रहे हैं और किसी की हत्या कर देना ही उन्हें अकेला उपाय लगता है! अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि सिर्फ आपस में टकरा जाने या किसी से वाहन छू जाने भर के बाद बेलगाम हिंसक रुख अख्तियार कर लेने वाले के भीतर इतना समझ पाने का भी विवेक नहीं बचता कि आवेश में आकर वह जो कर रहा है, उसका हासिल क्या होगा और उसके बाद उसे किन परिस्थितियों का सामना कर पड़ सकता है।

किसी व्यक्ति या समाज के सभ्य होने की कसौटी यही होती है कि उसमें लोग अपने आम व्यवहार को लेकर संयत रहें, सामान्य स्थितियों में सबके साथ सलीके से पेश आएं और प्रतिक्रिया की जरूरत पड़ने पर धीरज के साथ पहले विवेक का प्रयोग करें। संवाद और सौहार्द ऐसा जरिया हैं, जो गंभीर और जटिल समस्याओं का भी हल निकाल सकते हैं। हालत यह है कि मामूली बातों पर भी कुछ लोग इस कदर आपस में युद्ध के दुश्मन की तरह हिंसक हो जाते हैं कि नाहक ही किसी की जान तक चली जाती है। जबकि अगर कोई बात असहमति से आगे बढ़ कर विवाद के रूप में तब्दील होती दिखे तो व्यक्ति अपने विवेक का इस्तेमाल करके उसका समाधान आसानी से निकाल सकता है। इसके लिए बस अपने आप पर भरोसा और धीरज का होना जरूरी है। लेकिन अक्सर ऐसे मामले देखे जा सकते हैं, जिनमें लोग अहं और अविवेक का शिकार होकर आक्रामक और हिंसक रुख अख्तियार कर लेते हैं। नतीजतन, किसी की हत्या हो जाती है और इसका दोषी अपनी जिंदगी का बड़ा और अहम हिस्सा जेल की सजा काटते हुए बिताता है।

जीवन के प्रति अपनाएं सकारात्मक दृष्टिकोण

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

आत्महत्या एक मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक समस्या है जो विश्व स्तर पर व्याप्त है। देश के नगरीय क्षेत्र ही नहीं, ग्रामीण क्षेत्र भी इस समस्या से अछूते नहीं। सामान्यतः मनुष्य अपने जीवन से सर्वाधिक लगाव रखता है। किंतु क्या कारण है कि शरीर–परिवार के प्रति प्रबल मोह त्याग कर व्यक्ति आत्मघाती विचारों की ओर बढ़ जाता है, यह विचारणीय है। व्यक्ति का जीवन से अकस्मात मुख मोड़ लेना न केवल सामाजिक क्षति को दर्शाता है अपितु व्यवस्था के प्रति प्रश्न भी। यह विडम्बना ही है कि अशिक्षित हो अथवा शिक्षित, पुरुष हो अथवा महिला, किशोर– युवा हो अथवा वृक्ष, आधि– व्याधि के चलते कतिपय लोगों ने जिदगी के आकर्षण को ही नकार दिया। यह स्थिति आत्महत्या के कारणों पर विचार करने के लिए विवश करती है।

आर्थिक संकट, पारिवारिक क्लेश, प्रेम संबंधों में विफलता, लंबी बीमारी, नकारात्मक विचारों की बहुलता, अपेक्षाओं को पूरा न कर पाना, कार्यक्षेत्र में प्रबंधन के प्रति आक्रोश, ऋण वापसी में असमर्थता, प्रतियोगी परीक्षाओं में असफलता, सामाजिक व्यवस्था के प्रति क्षोभ आदि अनेक कारण हैं जिनसे आत्महत्या में प्रवृत्ति देखी गई।

भौतिकवादी युगीन व्यवस्था ने आत्मबल को क्षीण किया है। परिवेश में आत्मीय संबंधों की कमी–संवेदनहीनता के चलते व्यक्ति अपने अंदर के तनाव–अवसाद– नकारात्मक विचारों को न तो किसी से साझा कर पाता है और न ही कोई उसके प्रति गंभीर तथा संवेदनशील होता है। युवा पीढी प्रतियोगी परीक्षाओं, रोजगार के दबाव से जूझ रही है। जीवनशैली में अंतर्मुखी होना, एकाकीपन की समस्या, टूटते परिवार की व्यथा, ये भी अभावात्मक विचारों को बढ़ाते हैं। व्यक्ति में निराशा–हताशा– तनाव–अवसाद का अत्यधिक बढ़ना गंभीर मानसिक रोग का कारण भी हो सकता है। पीड़ित व्यक्ति को अपना जीवन ही नगण्य लग सकता है। शनैः– शनैः इस जटिल मनः स्थिति से कदाचित वह आत्महीनता की ओर भी बढ़ सकता है।

इस मानसिक विकृति को चिकित्सकीय परामर्श–उपचार से दूर किया जाना संभव है। रोगी उपचार द्वारा मानसिक स्वास्थ्य लाभ करते हुए सामान्य जीवन की ओर

लौट सकता है। सामान्यतः हमारे समाज में मानसिक रोगों के प्रति जागरूकता की कमी है। ध्यातव्य है कि मानसिक बीमारी भी शारीरिक रोग की ही तरह है, इस संदर्भ में नकारात्मक दृष्टिकोण उचित नहीं। शरीर की तरह मानसिक स्वास्थ्य को भी देखभाल की अपेक्षा है। स्मरणीय है कि तनाव–अवसाद को छिपाना सही नहीं। इस स्थिति में मनोचिकित्सक द्वारा काउंसलिंग उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त नकारात्मक विचारों के स्थान पर रचनात्मक विचारों को संप्रेषण प्रभावकारी हैं। परिजनों के स्नेहिल प्रयास भी रोगी को आत्महत्या से विमुख कर सकते हैं। इस ओर समाज–परिवार का भी दायित्व बनता है। सामाजिक परिवेश स्वस्थ धरातल पर विनिर्मित हो जिसमें स्वजन– पड़ोसी के दुःख– दर्द को समझा जा सके, उसका निदान किया जा सके, विषम परिस्थितियों में उसे संबल दिया जा सके। पीड़ित के व्यवहार में असामान्य बदलाव के प्रति उदासीनता बरतना समीचीन नहीं। उसकी मनोदशा में परिवर्तन के कारणों को जानना अपेक्षित है। सहपाठी– सहकर्मी–परिजन अवसादग्रस्त व्यक्ति को आत्महत्या जैसे भयावह विचारों से दूर करने में सहयोगी बन सकते हैं। अतिरिक्त देखभाल से किसी के जीवन की रक्षा की जा सकती है। इस हेतु अवसादग्रस्त व्यक्ति को प्रेरित किया जाए कि वह सामाजिक व्यवस्था से अलग–थलग न रहे, पारिवारिक संबंधों में संलग्नता बढ़ा, अवसाद उत्पन्न करने वाले विचारों से दूर रहने का प्रयास करे।

जीवन संघर्ष का पर्याय है। संघर्ष में सफलता के लिए पुरुषार्थ की प्रबल अपेक्षा है। किंतु संघर्ष में सदैव जीत न मिलना एक कटु यथार्थ है। इस तथ्य को भी समझना होगा। फिर पलायन करना समस्या का समाधान भी तो नहीं। कोई भी समस्या स्थाई नहीं होती। निराश–हताश होकर आत्महत्या में समाधान ढूंढना ठीक नहीं। जीवन जीते हुए विषम परिस्थिति को टक्कर दी जा सकती है। सोचने की बात तो यह भी है कि भविष्य में परिस्थितियों का रुख अनुकूल हो सकता है किंतु यह जीवन समाप्त हो जाने पर पुनः नहीं मिलने वाला। सुख दुःख तो आते जाते रहते हैं। जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर समाधान असंभव नहीं। संगीत आदि अभिरूचियां बढ़ाना–योग करना– मेलजोल बढ़ाना भी अनुकूलता में सहायक हैं। जीवन केवल आपका ही नहीं है, इससे परिजनों, आत्मीय जनों की भावना, भी जुड़ी हुई हैं। जीवन बहुमूल्य है। यह रक्षणीय है। जीवन के महत्व को नकारना सही नहीं। ध्यातव्य है कि यदि एक रास्ता बंद हो जाता है तो अन्य रास्ते खुलते भी हैं। अतः इस संसार यात्रा को व्यर्थ न जाने दें। अन्ततः आत्महत्या प्रकृति विरुद्ध है, इस दिशा की ओर सोचना भी सर्वथा अनुचित है।

दौड़ती तकनीकी का पीछा करती मानव अपेक्षाएं

शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

विज्ञान एवं तकनीकी निरंतर जिस द्रुत गति से विकास के दीर्घतर आयामों को स्पर्श कर रही हैं, उसी गति से मानव की अपेक्षाएं भी अपना दायरा बढ़ाती जा रही हैं। हाल ही की एक रिपोर्ट यह कहती है कि विश्व के अमीर व्यक्तियों में मृत्यु के बाद पुनः जीवित होने की चाहत बढ़ती जा रही है। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि अमेरिका, रूस, जर्मनी एवं आस्ट्रेलिया जैसे देशों में सैकड़ों रईस व्यक्तियों के मृत शरीर पुनर्जीवन पाने की आशा को लेकर सुरक्षित रखे हुए हैं। मृत शरीर को दोबारा जीवित होने की उम्मीद पर सुरक्षित रखे जाने की यह व्यवस्था क्रायोनिक्स फैसिलिटी कहलाती है। इसके अंतर्गत मृत शरीर को स्टील के विशेष बक्सों में दो सौ डिग्री ऋणात्मक तापमान में रखा जाता है। इन बक्सों में द्रव नाइट्रोजन भरी रहती है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका के एरिजोना में स्थित क्रायोनिक्स कंपनी एल्कोर में 205 शव सुरक्षित रखे गए हैं, जबकि 1417 लोगों ने अपना शव सुरक्षित रखने के लिए आवेदन किया है। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य देशों में भी विभिन्न व्यक्तियों का शव अथवा दिमाग सुरक्षित रखा गया है। क्रायोनिक्स फैसिलिटी के जनक रॉबर्ट विल्सन एटिंगर का शव भी उनकी दोनों पत्नियों एवं मां के मृत शरीर के साथ सुरक्षित रखा है।

यदि विज्ञान एवं तकनीकी की सीमाओं की बात की जाए तो संभवतरू एकमात्र कार्य जिसमें अभी तक सफलता नहीं मिल सकी है, वह है मृत शरीर को जीवित कर पाना। यद्यपि अलग–अलग सिद्धांतों एवं मतों के द्वारा जीवन एवं मृत्यु की व्याख्या की गई है किंतु फिर भी वैज्ञानिक आधार पर यह अभी तक एक रहस्य ही है कि शरीर में जीवन का मूल स्रोत क्या है एवं मृत्यु का मूल कारण क्या है। निस्संदेह आज तकनीकी समय के साथ विकास के नए नए प्रतिमान स्थापित करती जा रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, नैनो तकनीकी, रोबोटिक्स आदि रूपों में शोध एवं अन्वेषण की निरंतर गतिमान धारा ने ही मनुष्य के मन में आशा की यह किरण जगाई है कि शायद कभी भविष्य में मृत्यु के उपरांत शरीर को पुनर्जीवन देना संभव हो जाए। इसी उम्मीद पर सैकड़ों शव सुरक्षित रखे हुए हैं एवं न जाने कब तक रखे रहेंगे। एक ताजा शोध यह कहती है कि भविष्य में मोबाइल, लैपटॉप, घड़ी, ईयरफोन इत्यादि उपकरणों को चार्ज करने के लिए बाहर से वैद्युत ऊर्जा देने की आवश्यकता नहीं होगी। हमारे शरीर में मौजूद ऊष्मीय ऊर्जा ही विद्युत में परिवर्तित होकर इन उपकरणों को चार्ज कर दिया करेगी। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मोबाइल एवं लैपटॉप आने वाले दिनों में प्रयोग के दौरान बिना चार्जर, स्विच एवं सॉकेट के स्वतरू ही चार्ज होते रहेंगे तथा ष्बैटरी लोष जैसी चेतावनी भविष्य में लुप्त हो जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अस्तित्व में आते ही बड़ी–बड़ी उम्मीदों की किरणें चमक उठी हैं। प्रत्येक क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को बढ़ावा दिया जा रहा है। धीरे–धीरे यह मानव का विकल्प बन जाने की ओर अग्रसर है।

प्रश्न यह उठता है कि आखिरकार विज्ञान एवं तकनीकी मनुष्य की इन बड़ी–बड़ी उम्मीदों पर किस स्तर तक

खरी उतर पाएगी एवं यदि इंसान की अपेक्षाएं पूर्ण हो भी गईं तो फिर कौन सी चुनौतियां अथवा समस्याएं हमारे सामने मुंह बाए खड़ी होंगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जनक जेफ्री हिंटन का कहना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव सोच एवं क्षमता से भी आगे बढ़ चुकी है। यदि इस पर समय रहते नियंत्रण न किया गया तो यह तकनीक संपूर्ण विश्व के लिए खतरा बन सकती है। किसी तकनीक के जनक के द्वारा तकनीक के विषय में ऐसी चिंता जताना निश्चित रूप से एक गंभीर बात है। प्रश्न यह उठता है कि यदि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में इसी गति से विकास होता रहा तो क्या भविष्य में पृथ्वी पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं एल्गोरिथ्म से लैस रोबोटों का राज होगा। वहीं दूसरी तरफ यदि मृत शरीर को पुनर्जीवित कर देने की सफल तकनीकी अस्तित्व में आ गई तो उस स्थिति में भी तमाम चुनौतियां हमारे रास्ते में खड़ी होंगी। कल्पना करें कि यदि कोई व्यक्ति मृत्यु के सौ वर्षों के उपरांत जीवित हो पाता है तो उस समय उसके नवीन जीवन का उद्देश्य क्या होगा। उस समय के परिवेश के साथ तालमेल बिठा पाना उसके लिए निश्चित ही एक दुष्कर कार्य होगा। संभवतरू उस समय उसके समकालीन व्यक्तियों में से शायद ही कोई जीवित हो और तब उस स्थिति में वह नितांत भ्रमित एवं असहज महसूस करेगा। एक अन्य बात यह कि क्या जीवित होने के बाद व्यक्ति की स्मृति पुनः सक्रिय की जा सकेगी। दुर्भाग्यवश यदि ऐसा न हो सका तो जीवित व्यक्ति पूर्णतया एक नए जीव के समान होगा जिसे अपना जीवन शून्य से शुरू करना है। अपनी पुरानी उपलब्धियों को वह भूल चुका होगा और ऐसी दशा में मृत शरीर का पुनर्जीवित होना पूर्णतया अर्थहीन सिद्ध होगा। तकनीकी के साथ निस्संदेह समस्याएं, चुनौतियां एवं आशंकाएं भी दृढ़ता के साथ जुड़ी हुई हैं। इन्ही उम्मीदों और आशंकाओं के बीच उचित संतुलन स्थापित करके ही तकनीकी का लाभ उठाया जा सकता है।

पल दो पल का साथ

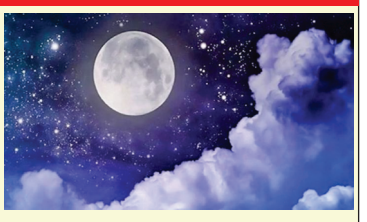

पल दो पल का
साथ था उसका
बेवजह मुहब्बत में
हम मारे गए

होश हम को
अब तक नहीं है
करके वो जब से
कातिल इशारे गए

चाँद की चाहत
हमे ले डूबा
रुठ के हम से
सितारे गए

मलय चक्रवर्ती, लखनऊ

इनबाक्स के महारथी

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर उ.प्र.

ये जो इनबॉक्स के महारथी है जो दिन दुपहरी रात 24X7 गुड मॉर्निंग, गुड नून ,गुड नाइट, गुड ये, गुड वो गुड फलाना, गुड ढिमका करते है और गालिब चच्चा, फराज मियाँ बन के शायरियों की दुकान लगा के लड़कियो के इनबॉक्स इनबॉक्स घूमते फिरते है एक तो सुबह–सुबह आँखे खोलते ही और दूसरा रात को आँखे बन्द करते ही। अगर ये इतने ही सलीकेदार बन के अपने वास्तविक दुनियाँ की घरों की माँ बहन बेटी और बीबी को सुबह आँखे खोलते ही गुड विशेस दे तो ये सोशल साइट्स की वर्चुअल दुनियाँ में ये चोंचलेबाजी ना करनी पड़े बेफालतू की। आते ही महानुभाव लोग ऐसे प्रोफाइल फोटो पर सुंदरता का बखान करते हैं जैसे सामने वाली महिला इम्प्रेस होकर उसी से व्याह कर लेगी। अपने घर की महिलाओ की अवहेलना करते हैं और बाहर जी हुजूरी करते नहीं थकते। अपनी उम्र से आधी उम्र की महिलाओं से एक एक घण्टे बोरिंग गपशप करके अपने बादाम खाने तक की कथा सुना देते हैं। पहले अपने अपने घरों में झाँक लो कही आपके घरों की महिलायें तो आपके प्यार और अपनेपन के लिए तरस तो नही रही?

कुछ तो .....कुछ इतने ठरकी है कि फ्रेंड रिक्वेस्ट ही इसलिए भेजते है और इसी इंतजार में बैठे रहते है की बस किसी लड़की की आईडी की हरी बत्ती जलती दिख जाये और इनकी जिंदगी बाग बाग हो जाये।

ऐसे हम महिलायें रिक्वेस्ट जल्दी नहीं लेती, मित्र सूची में हजारों की तादाद में प्रेमी भक्त कतार से पेंडिंग पड़े होते हैं लेकिन फिर भी स्पैम एसएमएस रिक्वेस्ट देखने जाओ वहाँ पर देखते ही लगता है ये वो पँछी लोग है जो लिस्ट में शामिल नहीं है फिर भी प्रोफाइल के इर्द–गिर्द फड़फड़ा रहे होते हैं, सुंदर नारी के रूप को देख लार टपका रहे होते हैं, टेक्स लगता नहीं भरपूर आनंद में गोते लगा रहे होते हैं, लेकिन सुंदरता का बखान भले घर के लोग ना करे, पर बुढ़ापे के लिबास पहन कर ये लोग काले बाल करके महिलाओं को सम्मोहित करने चले आते हैं सुंदर गोरी चिट्टी लड़कियों को देख कर शुरू हो जाते हैं कवितायें शायरियों की दिल वाली इमेज के साथ धड़ा धड़ मोहब्बत का बखान करना जैसे इनसे बड़ा आशिक कोई नहीं हो और बिना बात के कहते हैं कि :–'कहाँ से हो मोहतरमा'? क्या करती हो? शादी नहीं हुई क्या? कोई जॉब है या गृहिणी हो? 'ना जाने कितने अनगिनत सवालों के ढेर तो ये महारथी लगा देते हैं जैसे आज ही बात करके स्वयंवर रचा लेंगे ये लोग! पत्नि द्वारा प्रताड़ित लोग पिंजरे से छूटे ये भटके हुए लोग!

नेता जी की रैली

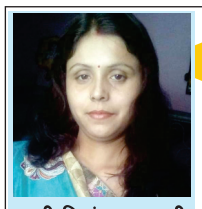

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

खुरखुर नेता जी रैली के साथ सायकिल यात्रा करने वाले खबर पाकर उनके चमचे हरकत में थे। सब चौकस थे कि रैली के सामने कोई विघ्न बाधा ना आये। इसकी सारी आशंकाओं को वे मिटा देने को तत्पर थे। रैली के रास्ते से लोगों को किनारे करते बढ़ रहे थे। उधर सुरक्षा बल और जांच एजेंसी रैली को कामयाब बनाने में अलग जुटी हुई थी। जनतंत्र की मजबूती के लिए सारे शतंत्रश की इस मुहिम की अगर परेशानी झेलनी पड़ रही थी तो सिर्फ जन को। परंतु भय के फेविकोल से उनका मुंह सटा हुआ था। आपत्ति की कोई आवाज नहीं निकल रही थी। मतलब जनतंत्र का जन और तंत्र अलग–अलग रंग में दिख रहा था।

हाथ मे माइक्रोफोन लिये नेता जी के चमचे बढ़ रहे थे, 'ऐ पंडित जी जाओ उस ओर अपना दुकान वुकान लगाओ। ऐ जुते वाले भाई एक दिन के लिये अपना दुकान तुम भी बंद करो। और हमारे नेता जी के रैली में चलो।' 'अरे साब! हम गरीब का वहाँ भला क्या काम?' 'ऐ चुपचाप चल । भोजन भी मिलेगा, और तुम्हारा वाला ठंडा भी।दूसरे पार्टी को हमको बस मुंडी गिनाना हैं। अपना साइकिल जरूर ले लेना।' 'साब आपका हुक्म सराखो पर। आप कहो तो सीधा वहीं पहुँचते हैं।' 'ठीक! दो चार लोग अपने आसपास से भी ले लेना। और सुनो! अगर जनाना मिल जाए तो ज्यादा बढ़िया रहेगा।' पसीना पोछ्ते जुते वाले भाई रैली के बाद होने वाली सभा की जगह पहुंचे, 'यह देखो साब! पूरी बस भर लाया हूँ। इसमें सब प्रजाती हैं। एक अष्टावक्र पंडित जी भी हैं।'

ठीक है। ठीक हैं। 'अपना काम ईमानदारी वाला होता हैं न। अब मेरा इनाम दे दो' 'अरे, पहले काम हो जाने दो। इनाम देने या ना देने का काम खुरखुर नेता जी के खासमखास ऊंटचंद करते हैं। उनसे जाकर मिल लेना। और हां! तुम्हारा वाला ठंडा का पेटी तुम्हारे बगल में जो मंगला फल वाला हैं उसके दुकान में रखा हैं। सुनो चुपचाप रैली के बाद उठाना। नेता जी स्पेशली कहवाया हैं। रैली में कोई बखेरा नहीं करेगा। नहीं तो नेता जी का इमेज खराब हो जाएगा।' खुरखुर नेता जी अष्टावक्र पंडित जी को सादर पूर्वक प्रणाम करते हुए कहा!हे विप्र! मैं आपको अपने साइकिल पर बिठाकर इस रैली का शुभारंभ करना चाहता हूँ।' खुरखुर नेता जी ने सिर का माप देख पंडित जी को तिलक लगाया। पंडित जी को भी जीवन में इतना सम्मान कभी नहीं मिला था। वे खुरखुर नेता जी का आदर देख कर मंत्रमुग्ध थे। तथाअस्तु कहकर उनके साइकिल पर आसीन होने को तैयार हो गये। खुरखुर नेता जी भी साइकिल को किसी तरह खींचते साइकिल पर पंडित जी को बिठाकर रैली के आगे आगे चलते रहे।

मूल्यहीन सोच

संकट में दुनिया का,
सबसे क्रुर धार मूल्यहीन सोच का,
सबसे निकृष्ट संस्कार है,
समस्त तकलीफें इसके अवतार हैं,
यह जीवन में बाधाएं उत्पन्न करता है,
सफलता और समृद्धि को,
आगे बढ़ने से अवरोध बनकर,
सामने खड़ा हो मुस्कान को खत्म करने में,
सबसे पहले खड़ा हो जाता है।
मूल्यहीन सोच एक क्रुरता है,
मूल्यहीन सोच सबमें सन्निहित,
सद्भाव और संवेदनशील भावनाओं को,
खत्म करने में मदद करता है।
यह विचारधारा का अवमूल्यन करने में,
हरक्षण हरक्षण मदद करता है,
राष्ट्रनिर्माण में बाधक बनकर,
सबसे पहले खड़ा हो जाता है।
हमें अपने अतीत को याद करते हुए,
मूल्यों को स्थापित करने में,
आगे बढ़ते हुए रहने की जरूरत है।
राष्ट्रीय समृद्धि को पाने में,
इस मंत्र की बड़ी अहमियत है।

डा. अशोक, पटना

अनाज

पैसे की चमक में
फिर फीका अनाज
आदमी उड़ता जहाज
अनाज की सच्ची कीमत
भूखे से बेहतर कोई नहीं जानता
पेट के लिए सेर भर मांगता
उसे कोई दे या न दे
पर रोटी की जुगाड़ की चाहत
मांगने पर दुत्कार व मन आहत
मानवीय संवेदनाएं बची कहाँ
गाँव–शहर इमारतो के बीच दफन
इंसानियत को नसीब नहीं कफन

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी

गजल

आतिश मुरादाबादी

यूँ हिरासाँ उसका दिल है दोस्तों के दरमियाँ
रात जैसे हो गई हो दुश्मनों के दरमियाँ
इस अँधेरी रात में जुगनू नजर आते नहीं
चाँद ओझल हो गया है बादलों के दरमियाँ
संग दिल हैं सब यहाँ पर हम किसे अपना कहे
बज्म में तन्हा सा हूँ मैं नफरतों के दरमियाँ
रुखसे पर्दा जब उठा तो सब हकीकत खुल गई
चाँदसा मुखड़ा भी इक है जालिमों के दरमियाँ
होश मन्दी है जरूरी मौसमों को देखकर
कुछ भँवर भी उड़ रहे हैं तितलियों के दरमियाँ
देख लो तकढदीर भी नाकाम होकर रह गई
आज नासेह आ फँसा है हाजियों के दरमियाँ
जामे मय मीना है 'आतिश' साथ में है साक़िया
अब न कोई आये बस इन मस्तियों के दरमियाँ

अम्मा आ गई

'जिन्दगी को फिर से,
वह महका गई।
रात फिर सपने में,
अम्मा आ गई।।

वो धुँआरे चूल्हे में,
रोटी बनाना।
और पसीने में,
हमेशा डूब जाना।
पर नहीं चेहरे पे,
कोई रंज रहता,
मौन रहकर के,
सभी रिश्ते निभाना।।
याद की डाली को,
फिर लहरा गई।।

किस को क्या भाता है,
वह सब जानती थी।
मन की बातों को,
सदा पहचानती थी।
बोलने का ढंग,
कोई भी रहे पर,
वह सदा ही,
सत्य ही अनुमानती थी।।
फिर से सर को,
प्रेम से सहला गई।।

सबकी आंखों से ,
छुपाकर जोड़ती थी।
पैसे कम थे पर,
सदा ही जोड़ती थी।
फिर कभी जब चीज,
की हम जिद पकड़ते,
तब ही वह अपना,
खजाना खोलती थी।।
उस गरीबी की,
अमीरी भा गई।।

आज बस अहसास,
अम्मा के महकते।
मुझमें छुपकर शब्द,
अम्मा के लहकते।
उनका ही आशीष है,
सर पर हमारे,
इसलिये ही हम सदा,
रहते चहकते।।
अंगुलियां छू, राह,
फिर दिखला गई।।'

डा इन्दु अजनबी

सावन था या प्यार तुम्हारा

आज शाम जब बरसा सावन,
भीगा अपना तन–मन सारा।
भ्रान्ति लिए बैठा हूँ अब तक,
सावन था या प्यार तुम्हारा।

कान्हा ने राधा से पूछा
तुम मुझको सच–सच बतलाना।
भली लगी कब तुम्हें बांसुरी
और अधर तक उसका आना।

भीगे हम भी भीगे तुम भी,
शायद था सौभाग्य हमारा।

कह देने से कम हो जाता
दुविधा में क्यों जीते–मरते।
तुम्हीं कहो उन सुखद पलों का
मूल्यांकन हम कैसे करते।

मनः पटल पर स्पर्शो का,
बार–बार ही चित्र उतारा।

क्या जाने फिर कब बरसेगा
दूर हुए तो मन तरसेगा।
दिल की बात कहेंगे किससे
दिल का क्या यह तो धड़केगा।

जितना जो कुछ मिला भाग्य से,
हमने तुमने है स्वीकारा।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

गीत वही गा पाता है

अपना कहकर अपना जो हो जाता है।
प्यार वफा के गीत वही गा पाता है।

अपनी सोचों को जो हम पर थोप रहे,
हमको दुनिया में कुछ ऐसे लोग मिले।
मन भावन बगिया वो सबकी होती है,
जिस बगिया में सतरंगी हों फूल खिले।

इनको समझाना मुश्किल नामुमकिन है,
अपना तो हर एक से प्यारा नाता है।

दीवाली में मिलकर दीप जलाए हैं।
होली में हम खूब अबीर उड़ाए हैं।
मजहब की दीवारों से आगे आकर
हमने कुछ ऐसे भी यार बनाए हैं।

नफरत का सौदागर नफरत बेचेगा,
हमको बस त्यौहार मनाना आता है।
अपने लफ्जों में सच्चाई की खुशबू,
मतलब हम ईमान सलामत रक्खेंगे।
दुश्वारी हों जीवन में चाहे जितनी,
पुरखों की हम आन सलामत रक्खेंगे।

अपना कर्म मुसलसल मेहनत करना है,
देने वाला झोली में वो दाता है।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

किशोरावस्था पर नशे का प्रभाव

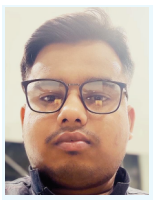

हन्नान
शाहजहांपुर

सर्वेक्षणों और आँकड़ों से पता चलता है कि ड्रग और ऐल्कोहॉल का उपयोग, विशेष रूप से नवयुवकों में बढ़ रहा है। यह सचमुच चिंता का विषय है क्योंकि इसके अनेक दुष्परिणाम होते हैं। समुचित शिक्षा और मार्गदर्शन से नवयुवक इन खतरनाक आदतों से अपने आपको बचा पायेंगे और स्वस्थ जीवन शैली अपनायेंगे। आमतौर पर जिन ड्रगों का कुप्रयोग किया जाता है वे हैं—ओपिओइड्स, कैनाबिनॉइड्स और कोका ऐल्कैलॉइड्स। इनमें से अधिकांश पुष्पी पादपों से प्राप्त किये जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो कवकों से निकाले जाते हैं। किशोरावस्था का अर्थ एक अवधि से है जिसके दौरान एक बालक समाज में अपनी प्रभावी सहभागिता के लिये अपनी वृत्ति और विश्वास के अनुसार परिपक्व होता है। 12—18 वर्ष की आयु की अवधि को किशोरावस्था माना जा सकता है। किशोरावस्था के साथ—साथ उनमें अनेक जैविक और व्यवहारात्मक परिवर्तन आते हैं। जिज्ञासा, जोखिम उठाने और उत्तेजना के प्रति आकर्षण और प्रयोग करने की इच्छा ऐसे सामान्य कारण हैं जो किशोरों को ड्रग तथा ऐल्कोहॉल के लिये अभिप्रेरित करते हैं। बच्चे की प्राकृतिक जिज्ञासा उसे प्रयोग के लिये अभिप्रेरित करती है। ड्रग और ऐल्कोहॉल के प्रभाव को फायदे के रूप में देखने से समस्या और भी जटिल हो जाती है। इस प्रकार ड्रग या ऐल्कोहॉल का पहली बार सेवन जिज्ञासा या प्रयोग करने के कारण हो सकता है लेकिन बाद में बच्चा इनका उपयोग समस्याओं का सामना करने से बचने के लिये करने लगता है पिछले कुछ समय से शैक्षिक क्षेत्र में या परीक्षा में सबसे आगे रहने के दबाव से उत्पन्न तनाव ने भी किशोरों को ऐल्कोहॉल या ड्रगों को आजमाने के लिये फुसलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है युवकों में यह बोध भी कि धूम्रपान करना ड्रग या ऐल्कोहॉल का उपयोग व्यक्ति के लिए ठंडा या प्रगति का प्रतीक है यही इन आदतों को शुरू करने का मुख्य कारण भी है इस बोध को बढ़ावा देने में टेलीविजन सिनेमा समाचार पत्र इंटरनेट ने भी सहायता की है किशोरों में ड्रग और ऐल्कोहॉल के कुप्रयोग के अन्य कारणों में परिवार के ढाँचे में अस्थिरता या एक दूसरे को सहारा देने तथा मित्रों के दबाव का

अभाव भी है ड्रगों और ऐल्कोहॉल के कुछ प्रभावों के प्रति लत एक मनोवैज्ञानिक आशक्ति है यह प्रभाव है सुखाभास और भला चंगा होने की अस्थाई भावना जो व्यक्ति को उस समय भी ड्रग एवं ऐल्कोहॉल लेने के लिये प्रेरित करने से जुड़ी हैं जबकि उनकी जरूरत नहीं होती या उनका इस्तेमाल आत्मघाती है ड्रग के बार बार उपयोग से हमारे शरीर में मौजूद ग्राहियों का स्तर बढ़ जाता है इसके फलस्वरूप ग्राही ड्रगों या ऐल्कोहॉल की केवल उच्चतर मात्रा के प्रति अनुक्रिया करते हैं जिसके कारण अधिकाधिक मात्रा में लेने की लत पड़ जाती है लेकिन एक बात बुद्धि में बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिये कि इन ड्रग को एक बार लेना भी व्यसन बन सकता है इस प्रकार ड्रग और ऐल्कोहॉल की व्यसनी शक्ति उन्हें इस्तेमाल करने वाले को एक दोषपूर्ण चक्र में घसीट लेते हैं जिससे इनका नियमित सेवन कुप्रयोग करने लगते हैं और इस चक्र से बाहर निकलना उनके बस में नहीं रहता किसी मार्गदर्शन या परामर्श के अभाव में व्यक्ति व्यसनी (लती) बन जाता है और उनके ऊपर आश्रित होने लगता है निर्भरता शरीर की वृत्ति है जो ड्रग ऐल्कोहॉल की नियन्त्रित मात्रा अचानक बंद कर दिये जाने पर अप्रिय विड्रावल सिंड्रोम के रूप में व्यक्त होती है इसके अभिलक्षण हैं चिंता कंपन मितली और पसीना आना जिनसे ड्रग—ऐल्कोहॉल का इस्तेमाल फिर से चालू कर दिये जाने पर छुटकारा मिल जाता है कुछ मामले में विड्रावल सिंड्रोम गंभीर हो सकता है और जीवन के लिये खतरनाक भी ड्रग और ऐल्कोहॉल के तात्कालिक प्रतिकूल प्रभाव अंधाधुंध व्यवहार बर्बरता और हिंसा के रूप में व्यक्त होते हैं। डूगों की अत्यधिक मात्रा से रिस्पाइरेटरी फेल्योर हर्ट फेल्योर या सेरेब्रल हेमरेज के कारण कोमा और मृत्यु हो सकती है ड्रगों का संयोजन या ऐल्कोहॉल के साथ उनके सेवन का आमतौर पर यह परिणाम अतिमात्रा होती है युवाओं में ड्रग और ऐल्कोहॉल दुरुपयोग के सबसे सामान्य लक्षण शैक्षिक क्षेत्र में प्रदर्शन में कमी बिना किसी स्पष्ट कारण के स्कूल या कॉलेज से अनुपस्थिति व्यक्तिगत स्वच्छता की रुचि में कमी अवसाद आक्रमणशील और विद्रोही व्यवहार परिवार और मित्रों से बिगड़ते सम्बन्ध सोने और खाने की आदतों में परिवर्तन भूख और वजन में घट बढ़ आदि हैं ड्रग ऐल्कोहॉल के कुप्रयोग के दूरगामी परिणाम भी हो सकते हैं। अगर ड्रग खरीदने के लिये पैसे नहीं मिले तो वह चोरी का सहारा ले सकता है यह प्रतिकूल प्रभाव केवल ड्रग ऐल्कोहॉल का सेवन करने वाले तक सीमित नहीं रहता कभी कभी ड्रग ऐल्कोहॉल आदि अपने परिवार या मित्र आदि के लिये भी मानसिक और आर्थिक कष्ट का कारण बन सकता है।

नागरिक अभिनन्दन के बहाने...

अयोध्या प्रसाद
लखनऊ

मुहल्ले की समस्याओं से निजात पाने के लिए मुहल्ला सुधार समिति के अध्यक्ष की अगुआई में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें अन्य समस्याओं के साथ मुहल्ले की बदहाल सड़क, अतिक्रमण के शिकार पार्क और नालियों की भौगोलिक दुर्दशा पर चिंतन मनन किया गया। सर्वसम्मति से तय किया गया कि वार्ड के विजेता सभासद का नागरिक अभिनन्दन किया जाए जिसमें उन्हें वार्ड की समस्याओं से भली भांति परिचित करा दिया जाए ताकि तदनुसार उनका निराकरण किया जा सके। समारोह में वार्ड के लोगों को उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने और परिचय का अवसर भी प्राप्त हो जाएगा। प्रारूप को साकार स्वरूप प्रदान करने के लिए अध्यक्ष महोदय ने रविवार की शाम को नागरिक अभिनन्दन के प्रस्तावित कार्यक्रम से सभासद महोदया को अवगत करा दिया।

चुनी गई नई सभासद महोदया अपने नागरिक अभिनन्दन का प्रस्ताव सुनकर फूली नहीं समा रही थीं। आसपास के आठ दस वार्ड में किसी सभासद का नागरिक अभिनन्दन होने की कोई चर्चा सुनाई नहीं दीए इसलिए वे अपने को गौरान्वित अनुभव करते हुए जनता का आभार व्यक्त करने के लिए आतुर सी दिख रही थी। उन्होंने अभिनन्दन समारोह में पति महोदय को भी साथ चलने को कहा तो उन्होंने संकोच के कारण चलने में असमर्थता जताई । उन्हें अच्छा नहीं लग रहा था कि पत्नी मंच पर विराजमान हो और वे सामने पड़ी कुर्सी पर बैठे अपने को दीन हीन महसूस करते हुए मन ही मन कुढ़ रहे हों। सभासद महोदया को पति की अनुपस्थिति में सम्मानित होना नहीं सुहा रहा था। इसी बहाने वह पति महोदय को नारी सशक्तीकरण की महिमा से भी परिचित कराना चाह रही थी इसलिए उन्होंने अर्धांग का वास्ता देकर आखिर पति महोदय को मना ही लिया। उन्हें पहली बार कहीं से सार्वजनिक सम्मान की प्राप्ति जो होने वाली थी। सम्मान की लालसा आखिर किसे नहीं होती।

नियत तिथि और समय पर सभासद महोदया नेता के लुक में मंच पर अवतरित हुईं। साथ में पति महोदय भी आए लेकिन वे सामने पड़ी अग्रिम पंक्ति की कुर्सी पर जाकर बैठ गए। कार्यक्रम आरंभ हुआ। सभासद महोदया को फूलों का गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया। उनकी जीत पर उनकी प्रशंसा के खूब बखान हुए। सामाजिक सक्रियता पर प्रशंसा के गीत गाए गए। खूब तालियां बजीं। फिर सभी उपस्थितों ने नाम सहित अपना परिचय दिया और उम्मीद जताई कि वे वार्ड को एक आदर्श वार्ड बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगी।

तमाम समस्याओं के साथ ही वार्ड में बने पार्क की दुर्दशा पर भी चिंतन व्यक्त किया गया। लोगों ने बताया कि शाम को बच्चों के साथ टहल के लिए पार्क में जाने का जब समय होता है, उसके पहले ढेरों कुत्ते घूमते टहलते पार्क में घुस जाते हैं और लोगों के बैठने के लिए कुर्सियों और चबूतरों पर अपना आधिपत्य जमा लेते हैं। कुत्तों के डर से बच्चे खुलकर खेलकूद नहीं पाते। कुत्तों की इस अतिक्रमणकारी घुसपैठ की प्रवृत्ति को रोका जाए और इसके लिए आवश्यक कदम उठाते हुए पार्क को कुत्ता मुक्त पार्क घोषित किया जाए। महत्वपूर्ण मुद्दों पर बातचीत के बाद अभिनन्दन समारोह के समाप्ति की घोषणा हो गई। तभी एक युवा सामाजिक कार्यकर्ता ने समस्याओं के निराकरण के प्रार्थनापत्र का पुलिंदा सभासद महोदया को सौंपा तो वे इस अप्रत्याशित भेंट से थोड़ी विचलित सी दिखीं फिर उन्होंने मुस्कराते हुए वह पुलिंदा लेकर अपने पति को थमा दिया। सभासद महोदया आगे आगे चल रही थीं और उनके पति पसीना पोंछते हुए पुलिंदा लेकर उनके पीछे पीछे। सभासद महोदया को नागरिक अभिनन्दन का रहस्य समझ में आ चुका था।

खूँटी पर आकाश

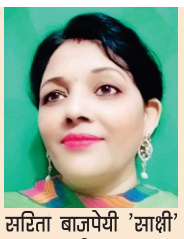

सरिता बाजपेयी 'साक्षी'
समीक्षक

मुझे पुस्तक पढ़ना हमेशा से प्रिय रहा है। किताबें मेरी पहली प्रथमिकता हैं। आज भी सोशल साइट्स से जल्दी उकता जाती हूँ। मेरे आस पास किताबों का जमावड़ा रहता है, इसलिए कि कौन अलमारी से बार बार निकाल कर लाए। कभी—कभी टीवी पर प्रवचनों को सुनते हुए अचानक हाथों किताब आ जाती है। गीता, भागवत, अखंड ज्योति, से लेकर साहित्य मित्रों की भेट की हुई पुस्तकें पढ़ना दिनचर्या में शामिल है।

कल इसी तरह हाथ में पुस्तक आ गई। 'खूँटी पर आकाश' (निबन्ध संग्रह) यह पुस्तक ज्ञानचंद मर्मज्ञ ने मुझे बेंगलुरू में भेट की थी। प्रथम सोपान—अपनी बात को पढ़ते हुए आत्मसात किया। पृष्ठ पलट सीधे अस्तित्व पर आ गई।

शब्दों के तिलिस्म का सम्मोहन—'अचानक वो मेरी हथेली पर आकर गिरी और टुकड़े टुकड़े होकर बिखर गई। 'उसके कोमल बदन का हर हिस्सा मृत्यु की अंतिम अभिलाषा को चुनौती देते हुए अपनी साँसों को सहेज रहा था। रचनाकार ने पानी की नन्ही बूंद के माध्यम से जो प्रसंग उठाया, उस बूंद की जिजीविषा पाठक पर असर छोड़ देती है। वो समंदर की विकराल लहरों से नहीं डरती है, अपितु तीव्रता से तल में जाकर समंदर के पेट में गुदगुदी कर लहरों को चढ़ाती है। उसे अपने अस्तित्व का बोध है। सकारात्मक

पुस्तक समीक्षा

ऊर्जा संचार है।

खूँटी—'खूँटी मेरा सारा बोझ हँसते हँसते उठा लिया करती थी। मैं अपने सपनों का संसार उसके ऊपर टांग दिया कर ता था। (बेंगलुरू जैसे खूबसूरत शहर में भी रचनाकार अपने गाँव अंचल से आज भी स्मृतियों में जुड़ा हुआ है, कि खूँटी आज भी याद है, जिस पर किताबों का बस्ता टांग दिया जाता था।)

झुर्रियों की आत्मा कथा—अंतर्मन की रमणीयता का इस निबन्ध में दर्शन होता है। जीवन दर्शन वर्णनातीत है। झुर्रियां अनोखी कहानी कहती हैं। शून्य—शून्य का अनंत संसार संस्कृति विरासत समेटे हुए है। मगर कहने को शून्य है। शून्य भारत की खोजबीन है, इससे परे रचना कर का मौलिक चिंतन छाप छोड़ जाता है।

प्रकाश की संभावना—मन का दीपक जलाने के लिए त्याग समर्पण की भावना होनी चाहिए। नानी की कहानी में संस्कारो की अनुभूति होती है पढ़कर बेहतर लगा है। भूख—भूख को थाली में ही रहने दो, इसे पढ़ने के बाद लोगों का रूख भूख ने नहीं अपनाया है। माँ के आँचल की गांठें —सम्वेद शीलता की पराकाष्ठा को स्पर्श अनुभवों का अलौकिक वर्णन है माँ के आँचल की गांठें शाश्वत मूल्यों से अभिसिंचित निबन्ध कालजयी है। नारी— अपराजित जीवन का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। मॉरिशस यात्रा—गिरमिटिया मजदूरों के रूप में विकसित हुई भारतीयों की स्थिति की दशा, दिशा, हिन्दी भाषा का कलेवर समेटे हुए है। विपरीत परिस्थितियों में अस्तित्व की लड़ाई की कहानी कह रहा है। इसके अलावा पुस्तक में समस्त 22 निबन्ध संग्रह अपने आप में दुर्लभ है।

खूँटी पर आकाश पूर्ण रूप से संग्रहणीय पुस्तक है। विद्वानों को पढ़ना चाहिए। विशेष रूप से स्कूलों के छात्रों को मदद मिलेगी।

बचपन की यादें

कभी बर्फ पानी,
कभी गुल्ली डंडा खेलते थे,
हम बचपन में
दुनिया समेट लेते थे।
कभी इंटरवल से पहले
डिब्बे खाली हो जाते थे,
फिर यारो के साथ
समोसे पकोड़ी खाते थे।
कभी बात-बात पर
कट्टी हो जाती थी,
कुछ खट्टी कुछ मिट्ठी
आधी टाफी यारो में बँट जाती थी।
कभी लड़ते झगड़ते
फिर एक हो जाते थे,
जाति धर्म नहीं
बस दोस्त समझ आते थे।
कभी वेवजह बहस
कभी टीचर से पीट जाते थे,
बाहर खड़े दोस्त को
खूब चिड़ाते थे।
कभी जीरो कट्टम, कभी पेन कैरम
नए नए खेल बनाते थे,
अपने ही खिलौने तोड़-तोड़कर
कुछ नया बनाते थे।
कभी कम नंबर कभी फेल
तो सभी पास हो जाते थे,
दोस्तो के साथ
परीक्षा का भी जश्न मनाते थे।
कभी छोटी-छोटी बातों पर
मैडम के पास जाते थे,
नकल बनाई, पेन चुभोया
मैडम को बताते थे।
कभी भूत कभी चुड़ैल के
किस्सों से डर जाते थे,
मुश्किल होने पर
शक्तिमान को बुलाते थे।
होली के रंग दीवाली के पटाखे
चार दिन पहले त्यौहार मनाते थे,
घर वालों के साथ मिलकर
खूब हुडदंग शोर मचाते थे।
कभी दो रुपए पांच रुपए में
शापिंग कर जाते थे,
हम स्कूल जाते समय
चिल्लर ही ले जाते थे।
कभी जब बाजार में
शिक्षक दिख जाते थे,
घबराकर माँ-बाप के सामने
हम सीधे बन जाते थे।
कभी दादी-नानी के प्यारे, मां के न्यारे,
सब के भले बन जाते थे,
मेहमानों के जाते ही
सारा नाश्ता चट कर जाते थे।

यश स्टार्क, शाहजहांपुर

गजल

ये मत पूछो कैसा होता।
जो तुम होते अच्छा होता।
तन्हा कर जाने से पहले,
मेरी खातिर सोचा होता।
तुमने छोड़ा तो मजबूरी,
मैं करता तो धोका होता।
घर में गर होती परधानी,
अपना घर भी पक्का होता।
मेरे दिल को पढ़ने वाला,
कोई अम्मा जैसा होता।
कुछ यारों से ही है यारी,
सबसे रखते धंधा होता।
मतलब वाली इस दुनिया में,
'पारस' कोई अपना होता।

विकास शर्मा 'पारस'

सावधानः उत्तर प्रदेश पर मधुमेह का खतरा

तेजी से बढ़ रहे हैं प्रारम्भिक रोगी

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के लोग सावधान हो जाएं अगर वह मीठा खाने के शौकीन है तो अब समय आ गया है कि वे अपने शौक पर लगाम लगा दें क्योंकि उप्र के लोगों में तेजी से प्रारम्भिक स्तर पर मधुमेह का खतरा मंडराने लगा है। यहां पर अन्य राज्यों की तुलना में प्रारम्भिक रोगियों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। उप्र में देखने में आया है कि यहां पर अन्य राज्यों की अपेक्षा मधुमेह के प्रारंभिक रोगी (प्री डायबिटिक) मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। राष्ट्रीय स्तर पर ये मरीज 15.3 फीसदी हैं। जबकि उप्र में 18 फीसदी का आंकड़ा पार कर गया है। इस बात का खुलासा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के अध्ययन में किया गया है। चिकित्सा विशेषज्ञों की सलाह है कि जिन लोगों का एचबीए1सी का स्तर 5.5 से अधिक है, उन्हें तत्काल उपचार शुरू कर देना चाहिए। मोटापा कम करके इस बीमारी के बढ़ते भार को कम किया जा सकता है।

आईसीएमआर की ओर से कराए गए अध्ययन में उप्र में मधुमेह का प्रसार 4.8 फीसदी पाया गया है जो अन्य राज्यों की अपेक्षा कम है, लेकिन मधुमेह के प्रारंभिक (प्री–डायबिटिक) मरीजों की संख्या आबादी का करीब 18 फीसदी है। जबकि राष्ट्रीय औसत 15.3 फीसदी है। ऐसे में ये मरीज साल से दो साल बाद मधुमेह रोगी में तब्दील हो सकते हैं। यानी राज्य पर मरीजों का भार तेजी से बढ़ेगा।

चिकित्सकों का मानना है कि मधुमेह के प्रारंभिक मरीजों में कुछ समय बाद करीब एक तिहाई मधुमेह रोगी हो जाते हैं। मधुमेह के प्रारंभिक रोगी वे होते हैं, जिनके रक्त में शुगर लेवल सामान्य से ज्यादा है पर इतना ज्यादा नहीं है कि उन्हें मधुमेह की श्रेणी में रखा जाए। जिन लोगों का शुगर लेवल खाना खाने के पहले 100 से 126 और खाना खाने के बाद 140 से 200 (एमजी–डीएल) के स्तर पर रहता है और एचबीए1सी 5.5 से 6.5 फीसदी के बीच हैं, उन्हें सावधान हो जाना चाहिए। उन्हें तत्काल चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। खानपान का ध्यान रखकर

होम्योपैथ चिकित्सक डा. वाई.के. मलिक का मानना है कि प्रारंभिक मधुमेह के स्तर पर ही मधुमेह की तरह सावधानी बरती जाए तो इसे नियंत्रित किया जा सकता है। प्रारंभिक स्तर का पता लगते ही चिकित्सकीय सलाह से दवा शुरू कर दें। मोटापा हर हाल में कम करें। खुद को सक्रिय रखें। कम से कम 30 मिनट तेज गति से टहलें और योग करें। रोगी को खाने में शक्कर की मात्रा कम कर सब्जियों, फलों और साबूत अनाज बढ़ा देना चाहिए। कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा के संतुलित अनुपात का ध्यान रखें। चिकित्सक की सलाह पर रक्त शर्करा स्तर आदि की जांच करते रहे।

अपराधों पर अंकुश लगाने में योगी सरकार सफल

महिला अपराधों के निस्तारण में उप्र देश में दूसरे स्थान पर, बिहार की हालत दयनीय

लोक पहल

लखनऊ। प्रदेश की योगी सरकार ने अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए जो कदम उठाये थे उनके परिणाम अब सामने आने लगे है। बलात्कार और पाक्सो एक्ट के मामलों के निस्तारण में उप्र देश में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। आंकड़ों के अनुसार ऐसे मामलों को 97.80 प्रतिशत तक निस्तारित किया गया है। वहीं, महिलाओं और बालिकाओं से संबंधित अपराध के लंबित मामलों के निस्तारण में भी उप्र ने देश में दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में इसके लिए गृह विभाग के प्रयासों की सराहना की है। अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को बताया कि ऐसे मामलों के निस्तारण में पहले स्थान पर दादरा और नगर हवेली एवं दमन दीव है। वहीं, तीसरे स्थान पर पुडुचेरी है। सबसे खराब प्रदर्शन बिहार राज्य का रहा है।

प्रदेश के भदोही जिले का प्रदर्शन सबसे अच्छा पाया गया है। दूसरे स्थान पर मऊ और तीसरे स्थान पर बलरामपुर है। मुख्यमंत्री ने बैठक में मौजूद गृह विभाग के अधिकारियों को जांच प्रक्रिया में तेजी लाने तथा लंबित जांच को जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि महिला अपराध के मामलों के निस्तारण में प्रदेश को देश में पहले स्थान पर लाने का प्रयास किया जाए। इससे देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी हमारी अलग छवि बनेगी।

आईआईएमसी के विद्यार्थियों के बिना अधूरी है भारतीय पत्रकारिताः प्रो. द्विवेदी

उपलब्धियों से भरा रहा महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी का कार्यकाल

लोक पहल

नई दिल्ली। भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) में महानिदेशक प्रो. डॉ. संजय द्विवेदी का विदाई समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रो. द्विवेदी ने कहा कि आईआईएमसी के शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर पत्रकारिता की नई इबारत लिख सकते हैं। भारतीय पत्रकारिता का इतिहास आईआईएमसी के विद्यार्थियों के बिना अधूरा है। अपनी प्रतिभा से भारतीय जन संचार संस्थान के विद्यार्थियों ने पूरे विश्व में संस्थान का नाम रोशन किया है। समारोह में अपर महानिदेशक डॉ. निमिष रुस्तगी एवं डीन (अकादमिक) प्रो. गोविंद सिंह सहित समस्त संकाय सदस्य, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी), नई दिल्ली को देश का सर्वश्रेष्ठ मीडिया संस्थान बनाए रखने की दृष्टि से महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी का कार्यकाल याद रखा जाएगा। वे तीन वर्ष से संस्थान के महानिदेशक हैं। 12 जुलाई, 2023 को उनका कार्यकाल पूरा हो रहा है। पिछले तीन वर्षों में प्रत्येक सर्वेक्षण में आईआईएमसी को देश का सर्वश्रेष्ठ मीडिया प्रशिक्षण संस्थान घोषित किया गया है। इसका श्रेय प्रो. द्विवेदी के कुशल प्रशासक और योजक व्यक्तित्व को जाता है।

अपने कार्यकाल में प्रो. द्विवेदी ने जहां आईआईएमसी द्वारा प्रकाशित दो यूजीसी–केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिकाओं 'संचार माध्यम' और 'कम्युनिकेटर' को रिलांच किया, वहीं तीन नई पत्रिकाएं 'राजभाषा विमर्श', 'संचार सृजन' और 'आईआईएमसी न्यूज' भी शुरू कीं। जम्मू और अमरावती में हिंदी पत्रकारिता का पाठ्यक्रम प्रारंभ करने के अलावा प्रो. द्विवेदी ने आइजोल सहित तीन केंद्रों पर डिजिटल मीडिया का नया पाठ्यक्रम भी शुरू किया। इसके अलावा उन्होंने 'शुक्रवार संवाद' जैसा रचनात्मक प्रयोग भी प्रारंभ किया, जो विद्यार्थियों के बीच बेहद चर्चित रहा। सोशल मीडिया के माध्यम से आईआईएमसी की पहचान को विस्तार देने में भी प्रो. द्विवेदी की बड़ी भूमिका रही है।

अब दुश्मनों की खैर नहीं, भारत ने तैयार किया आत्मघाती 'ड्रोन'

लोक पहल

कानपुर। भारत के दुश्मनों की अब खैर नहीं, आईआईटी कानपुर ने एक ऐसा ड्रोन तैयार किया है जो 100 किलोमीटर जाकर दुश्मन के ठिकाने को नेस्तनाबूद कर देगा। अभी तक ड्रोन केवल दुश्मन के ठिकानों की जानकारी ही उपलब्ध करा पाते थे। खोजखबर की जानकारी देने वाले ड्रोन के सफल संचालन के बाद अब आईआईटी कानपुर ने आत्मघाती ड्रोन तैयार किया है। यह ड्रोन दुश्मन के ठिकाने पर जाकर खुद ही फट जाएगा। जीपीएस ब्लॉक होने की स्थिति में भी एआई की मदद से यह ड्रोन लोकेशन को तलाश कर वहां विस्फोट कर देगा। ड्रोन छह महीने के ट्रायल के बाद पूरी तरह से तैयार हो जाएगा।

यह आत्मघाती ड्रोन भारतीय सीमा से 100 किमी की दूरी तय कर वार करेगा। इसको अपने 100 किलोमीटर के लक्ष्य तक पहुंचने में करीब आधा घंटे का समय लगेगा। आईआईटी के एयरोस्पेस इंजीनियरिंग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. सुब्रमण्यम सडरेला और उनकी टीम ने इसे विकसित किया है। इसमें स्टेल्ड तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। दो मीटर लंबा फोल्डेबल फिक्स्ड विंग वाला ड्रोन है। 14 हजार फीट की ऊंचाई तक उड़ने में सक्षम है। यह ड्रोन एआई तकनीक पर काम करेगा। इसमें विंग में कैमरे और सेंसर लगे हैं। एआई तकनीक की मदद से यह ड्रोन जीपीएस ब्लॉक होने के बाद भी टॉरगेट को तबाह कर देगा।

ड्रोन सेना के लिए सबसे बड़ी ताकत बनने वाला है। यह ड्रोन अल्गोरिदम के हिसाब से चलता है। मतलब, यह खुद भी फैसला ले सकेगा और इसे बेस स्टेशन से रिमोट से भी नियंत्रित किया जा सकता है।

भंडाफोड़: यूपी में फर्जी फर्मों ने किया 600 करोड़ का फ्राड

लोक पहल

लखनऊ। फर्जी कम्पनियां बनाकर करोड़ों का लेन देन कर सरकार को टैक्स में चूना लगाने वाली सैकड़ों फर्म सामने आई है। केवल उत्तर प्रदेश में ही करीब आठ सौ फर्जी फर्मो में लगभग 600 करोड़ का फ्राड कर डाला। फर्जी फर्मों के खिलाफ देशभर में छेड़ा गया जांच अभियान उत्तर प्रदेश में लगभग पूरा हो गया। पहली बार स्टेट जीएसटी और सेंट्रल जीएसटी द्वारा संयुक्त रूप से छेड़े गए अभियान के तहत प्रदेश में करीब 12 हजार संदिग्ध फर्मों की जांच की गई। इनमें लगभग 779 फर्में फर्जी पाई गईं, जिनके जरिए 615 करोड़ रुपये की टैक्स चोरी व फ्राड किया गया। ये आंकड़ा अभी और बढ़ सकता है।

बोगस फर्मों के जरिए जालसाज फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट लेकर सरकार को अरबों का चूना लगा रहे हैं। लाख प्रयासों के बावजूद टैक्स चोरी पर पूरी तरह रोक नहीं लग पा रही है। इसे देखते हुए 16 मई से 15 जुलाई तक स्पेशल आल इंडिया ड्राइव शुरू की गई थी। इसके तरह स्टेट जीएसटी और सेंट्रल जीएसटी को करीब 12 हजार संदिग्ध फर्मों का डाटा जांच के लिए दिया गया था जिनकी जांच पूरी हो गई। जांच के दौरान लगभग 779 फर्जी फर्मों का भंडाफोड़ हुआ। इन फर्मों ने 615 करोड़ रुपये का फर्जीवाड़ा कर सरकार को चूना लगाया।

इसमें से करीब 6500 संदिग्ध फर्मों की जांच स्टेट जीएसटी ने की और 129 फर्जी फर्मों को पकड़ा गया। इन फर्मों से 65 करोड़ रुपये का फर्जीवाड़ा किया गया। सेंट्रल जीएसटी और सेंट्रल एक्साइज लखनऊ जोन को भी संदिग्ध फर्मों के खिलाफ जांच में बड़ी सफलता मिली है। जोन में लखनऊ, कानपुर, आगरा, इलाहाबाद और वाराणसी कमिश्नरेट आते हैं।

अब दोनों विभाग फर्जी फर्मों से जुड़ी फर्मों के रैकेट की पड़ताल कर रहे हैं। आगे बड़े स्तर पर कार्यवाही की तैयारी की जा रही है। जांच के दौरान पाया गया कि बोगस फर्मों के पंजीकरण के लिए फर्जी बिजली के बिल, फर्जी आधार, प्रापर्टी टैक्स और किरायानामा का इस्तेमाल किया गया। बड़ी संख्या में फर्जी पैन के उपयोग के

उप्र में छाएगी हरियाली, लगाए जाएंगे 35 करोड़ पौधे

लोक पहल

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उप्र सरकार एक नया रिकॉर्ड कायम करने जा रही है। सरकार ने इस वर्ष 35 करोड़ पौधे लगाने की योजना बनाई है। पिछले छह वर्षों 131 करोड़ से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं। इनका संरक्षण भी किया जा रहा है। पौधरोपण की नोडल एजेंसी वन विभाग है। सरकार की योजना है कि इस काम में सभी विभागों, संस्थाओं और आम नागरिकों का सहयोग लिया जाए। आम लोगों की अधिक–अधिक सहभागिता करने के लिए सरकार ने तय किया है कि स्कूलों में प्रभात फेरी, स्लोगन राइटिंग, निबंध और स्पीच कंपटीशन और वाल राइटिंग आदि आयोजित किये जाएंगे।

वन भूमि, ग्राम पंचायत और सामुदायिक भूमि, एक्सप्रेसवे, हाईवे–फोरलेन रोड, नहर, विकास प्राधिकरण की भूमि, रेलवे भूमि, मेडिकल और शैक्षिक संस्थानों की भूमि के साथ–साथ निजी परिसरों में भी पेड़ लगाए जा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल मैदानों के चारों तरफ पेड़ लगाए जा सकते हैं। सरकार ने तय किया है कि राज्य का ग्रीन कवर मौजूदा 9 फीसदी से बढ़ाकर 15 फीसदी किया जाएगा। अगले पांच सालों में कुल 175 करोड़ पौधे लगाएं जाएंगे और उनका संरक्षण किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि बारिश का सीजन शुरू हो चुका है। यह मौसम पौधरोपण के लिए सबसे आदर्श समय है। पूरे उत्साह, उमंग के साथ हमेशा की तरह इस साल भी पौधरोपण किया जाएगा।

आवश्यकता है
लोक पहल
साप्ताहिक समाचार पत्र को
जनपद शाहजहाँपुर के समस्त क्षेत्रों, तहसीलों, ब्लाक एवं ग्राम स्तर पर संवाददाता चाहिए।
पूर्ण बायोडाटा सहित आवेदन करें।
सम्पर्क करें : 9935740205, 9455152599 | Write to us : lokpahalspn@gmail.com

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय

नैक बी+

मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर

प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

विधि त्रिवर्षीय (एल.एल.बी.) एवं विधि स्नातकोत्तर (एल.एल.एम.) पाठ्यक्रम में प्रवेश परीक्षा हेतु ऑनलाइन आवेदन

ऑनलाइन आवेदन की तिथि

01 जुलाई 2023 से 25 जुलाई 2023 तक

विश्वविद्यालय बेवसाइट

www.mjpru.ac.in

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

05842-796171, 796174,
7007902156, 9415703943, 9473938629, 9453721669

नोट–स्नातक उत्तीर्ण/स्नातक अंतिम वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित विद्यार्थी एल.एल.बी. (त्रिवर्षीय) प्रवेश परीक्षा में आवेदन कर सकते है।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।